04 - हानिकारक नहीं, संस्कारक बापू

05 - संगीत: रगों में बहती अदृश्य नदी

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 28 जून, 2026

06 - योग : स्वस्थ मानवता, संतुलित प्रकृति और सतत भविष्य का आधार

07 - परदे पर पति-पत्नी के रिश्तों में नोकझोंक

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 296, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

मानसून के स्वागत में मांडू

फोटोः जगदीश कौशल

सुप्रभात

जो दुनिया हाथ से
जाने लगी है
वो दुनिया अब
समझ आने लगी है।
अब उस लौ में
चमक आने लगी है
हवाओं से जो
टकराने लगी है।
हुआ यूँ है ग़मों
में रोते-रोते
ग़मों को ज़िंदगी
गाने लगी है।
ज़ुबाँ पर लग
चुके हैं इतने पहरे
कि ख़ामोशी भी
हकलाने लगी है।
है शायद मुंतज़िर
दो ग़ज़ ज़मीं भी
हमें भी नींद-सी
आने लगी है।

– राजेश रेड्डी

90 फीसदी थ्रस्ट टेस्ट सफल

अब इंजन टेस्ट की बारी

● गगनयान मिशन पर खुशखबरी! इसरो चीफ ने दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान की तैयारियां अब निर्णायक चरण में पहुंच गई हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के चेयरमैन वी. नारायणन ने कहा कि मिशन से जुड़े कई अहम परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे किए जा चुके हैं और अब एजेंसी इंजन टेस्ट की तैयारी में जुटी है। उन्होंने संकेत दिया कि पहली मानवरहित उड़ान की तारीख का ऐलान भी जल्द किया जाएगा। वी. नारायणन ने बताया कि हाल ही में एक महत्वपूर्ण परीक्षण किया गया, जिसमें थ्रस्ट चेंबर को छोड़कर करीब 90 प्रतिशत थ्रस्ट लोड हासिल किया गया। उन्होंने इसे बड़ी उपलब्धि और महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि अब अगला कदम इंजन टेस्ट है, जिसकी तैयारियां तेज हैं।

● **मानव मिशन से पहले होगी ह्यूमन रेटिंग**–इसरो प्रमुख ने कहा कि गगनयान एक अत्यंत तकनीक आधारित मिशन है, इसलिए इसमें इस्तेमाल होने वाले लॉन्च व्हीकल को ह्यूमन रेटिंग प्रक्रिया से गुजरना होगा। इस प्रक्रिया के जरिए यह सुनिश्चित किया जाता है कि अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित तरीके से अंतरिक्ष में भेजा और वापस लाया जा सके।

● **तीन मानवरहित मिशनों के बाद जाएगी मानव उड़ान**–उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तविक अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने से पहले इसरो तीन मानवरहित मिशन संचालित करेगा। फिलहाल एजेंसी पहले मानवरहित मिशन की दिशा में तेजी से काम कर रही है। वी. नारायणन ने कहा कि इन मिशनों की तारीखों की जानकारी भी बहुत जल्द सार्वजनिक की जाएगी।

नव्य, दिव्य और भव्य सिंहस्थ के लिए तेजी से चल रही हमारी तैयारी: मुख्यमंत्री

● सिंहस्थ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला, स्वच्छ सिंहस्थ, स्वस्थ सिंहस्थ ही हमारा संकल्प ● शिप्रा नदी पर हो रहा 853.46 करोड़ रूपए से 22 नए पुलों का निर्माण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हर 12 साल में होने वाला सिंहस्थ भारत का ही नहीं, विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला है। यह हमारी अपनी समृद्ध भारतीय संस्कृति, दर्शन, पीढ़ियों से चली आ रही विरासत, अटूट आस्था और हमारी आध्यात्मिक परम्पराओं का महासंगम है। इस धार्मिक उत्सव में मां शिप्रा के जल में स्नान करने से पापों का शमन होता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सिंहस्थ-2028 को नव्य प्रारूप में भव्य, दिव्य और आध्यात्मिक बनाने की ओर बढ़ रहे हैं। इसके लिए हमारी सभी तरह के प्रबंधन एवं तैयारियां तेजी से जारी हैं। हम सब मिलकर पूरी निष्ठा, लगन और समर्पण से काम करेंगे, तभी सिंहस्थ-2028 एक नई मिसाल कायम करेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को उज्जैन में सिंहस्थ-2016 के अनुभव, 2028 का संकल्प विषय पर हुई एक वृहद प्रशिक्षण कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का विधिवत् शुभारंभ किया। कार्यशाला में मुख्यमंत्री ने सिंहस्थ-2028 के महाआयोजन से जुड़े सभी प्रशासनिक, पुलिस, स्वास्थ्य, नगर निगम और अन्य निर्माण एजेंसियों के अधिकारियों एवं अन्य जनों से कहा कि सिंहस्थ केवल एक मेला नहीं, करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र बिन्दु है। यह हमारी परम्पराओं, विरासत का भव्य प्रतीक है।

विकसित की जा रही है बेहतर रोड कनेक्टिविटी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन आने-जाने के लिए आसपास के सभी शहरों तक बेहतर रोड कनेक्टिविटी विकसित की जा रही है। पड़ोसी राज्यों से भी चर्चा कर श्रद्धालुओं के लिए सुगम आवागमन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए जाएंगे। दूसरी ओर रेलवे लाइन के विकास कार्य भी आवागमन के लिए महत्वपूर्ण हैं। अब फतेहाबाद का ट्रैक चालू हो गया है और नागदा जाने के लिए रेलगाड़ियों को अब उज्जैन आने की आवश्यकता नहीं है। प्रधानमंत्री और केन्द्रीय रेल मंत्री ने उज्जैन में एक नए रेलवे स्टेशन की सौगात दी है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि इस कार्यशाला के जरिए पिछले सिंहस्थ आयोजनों में उज्जैन में सेवाएं दे चुके सभी अनुभवी अधिकारियों और नागरिकों से जो भी सुझाव मिलेंगे।

सिंहस्थ - 2028 के लिए समितियों का होगा गठन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष 1980 के सिंहस्थ में उन्होंने स्वयं भी स्काउट एंड गाइड वॉलेंटियर के रूप में श्रद्धालुओं की सेवा की थी। वर्ष 1992 में सिंहस्थ समिति की बैठकों में शामिल होने का अवसर भी मिला। सिंहस्थ समितियों में हर वर्ग के अनुभवी लोगों को शामिल कर उनके सुझाव लिए जाते हैं। आगामी सिंहस्थ के लिए सभी समितियों का गठन होना है। उन्होंने कहा कि यह हम सभी का सिंहस्थ है। पहले के सिंहस्थ में साधु-संतों और श्रद्धालुओं के ठहरने की व्यवस्था कराने की चुनौती थी। लेकिन वर्ष 2022 के बाद उज्जैन शहर में होटल निर्माण, सड़क चौड़ीकरण और अधोसंरचना विकास के अनेक कार्य शुरू हुए।

सीएम का दावा-बंगाल में लागू होगा यूसीसी

● कहा-लैंड जिहाद, लव जिहाद और जबरन धर्मांतरण पर कानून लाएंगे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि उनकी सरकार राज्य में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करेगी। लैंड जिहाद, लव जिहाद और जबरन धर्मांतरण के खिलाफ सख्त कानून भी लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो लोग अवैध तरीके से भारत में आए हैं। देश की संस्कृति या राष्ट्रीय सुरक्षा के खिलाफ गतिविधियों में शामिल हैं, उन्हें राज्य में रहने नहीं दिया जाएगा।

पीएम मोदी ने सेशेल्स में कछुओं को पत्तियां खिलाईं

256 साल पहले 5 भारतीय रहने पहुंचे थे, अब हर 8वां नागरिक भारतवंशी

विक्टोरिया (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को तीन दिवसीय दौरे पर सेशेल्स पहुंचे। राजधानी विक्टोरिया में राष्ट्रपति पैट्रिक हर्मिनी ने उनका स्वागत किया। दोनों नेताओं ने नेशनल बोटैनिकल गार्डन में एल्डाब्रा जाइंट कछुओं को पत्तियां खिलाईं। मोदी 29 जून को सेशेल्स के 50वें राष्ट्रीय दिवस समारोह में मुख्य अतिथि भी होंगे।

हिंद महासागर में बसे इस छोटे से द्वीपीय देश का भारत से रिश्ता सिर्फ रणनीतिक नहीं, बल्कि 256 साल पुराना भी है। साल 1770 में जब यहां पहली स्थायी बस्ती बसाई गई, तब वहां पहुंचने वाले 27 लोगों में 5 भारतीय भी शामिल थे। बाद में बिहार, तमिलनाडु और गुजरात से भी बड़ी संख्या में भारतीय यहां आकर बस गए।

आज सेशेल्स की करीब 1.20 लाख आबादी में लगभग हर आठवां नागरिक भारतीय मूल का है। देश के राष्ट्रपति वेवेल रामकलावन के पूर्वज भी

बिहार के गोपालगंज जिले से थे। ऐसे में मोदी का यह दौरा दोनों देशों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक रिश्तों को नई मजबूती देने वाला माना जा रहा है।

क्रिकेट से जुड़े केतन मर्डर केस के तार

● सिया के भाई साहिल का करीबी है चेतन ● पुणे में एक ही टीम के लिए खेलते थे दोनों

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे के किले में हुए सनसनीखेज मर्डर केस की जांच में अब क्रिकेट का एंगल भी सामने आया है। जांच में सिया गोयल और उसके प्रेमी चेतन चौधरी के रिश्तों की गहराई से पड़ताल की जा रही है। सिया पर आरोप है कि उन्होंने चौधरी के साथ मिलकर रची गई एक साजिश के तहत 18 जून को लोहागढ़ किले की एक चट्टान से अपने मंगेतर केतन अग्रवाल को धक्का देकर उनकी जान ले ली। सिया के भाई साहिल गोयल से कल 10 घंटे से ज्यादा समय तक पूछताछ की गई। उसने बताया है कि उन्हें चौधरी के बारे में पता था जबकि उसके माता-पिता ने पहले कहा था कि उन्हें उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। साहिल गोयल ने पुलिस को बताया कि सिया उसके क्रिकेट मैच देखने जाती थीं और वहीं पहली बार चेतन से मुलाकात हुई थी। पुलिस के

मुताबिक, बाद में पिछले साल एक कॉमन दोस्त की दीवाली पार्टी में वे फिर मिले, जिसके बाद वे एक-दूसरे के करीब आ गए।

रिकवर की जा रही डिलीट चैट

जांच में पता चला है कि दोनों आरोपियों सिया गोयल और चेतन चौधरी ने अपने मोबाइल फोन से अपनी वॉट्सएप चैट, इंस्टाग्राम बातचीत और अन्य डिजिटल रिकॉर्ड डिलीट कर दिए थे। उनकी बातचीत का पूरा रिकॉर्ड वापस पाने के लिए अब डिलीट किए गए डेटा का फोरेंसिक एनालिसिस किया जा रहा है। जांच में यह भी पता चला है कि अग्रवाल की कथित हत्या से एक दिन पहले 17 जून को गोयल और चौधरी पुणे के लुल्ला नगर में एक कैफे में लगभग एक घंटे तक मिले थे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भोपाल ■ रविवार, 28 जून 2026

संक्षिप्त समाचार

अमेरिका ने ईरान पर फिर से दागीं मिसाइलें

- शियादेश के मिसाइल-ड्रोन ठिकानों पर किया हमला

तेहरान/वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने शुक्रवार को ईरान पर करीब एक घंटे तक हमले किए। अमेरिकी सेना ने मिसाइल-ड्रोन ठिकानों और तटीय रडार साइट्स को निशाना बनाया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि ईरान ने सीजफायर तोड़ा, इसलिए जवाबी कार्रवाई की गई। अमेरिकी सेंट्रल कमांड के मुताबिक, 25 जून को ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट में सिंगापुर के कार्गो शिप 'एमवी एवर लवली' पर ड्रोन हमला किया था। दूसरी ओर, ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी के मुताबिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स की नौसेना ने दावा किया है कि उसने जवाब में क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है ईरान की संसद के सदस्य इब्राहिम अजीजी ने एक्स पर लिखा कि अमेरिका ने एक बार फिर बातचीत के बीच ईरान पर हमला किया है। युद्धविराम का यह उल्लंघन अमेरिका के लिए पीछे हटने और पछतावे की वजह बनेगा। ईरान ने आरोप लगाया कि अमेरिका और इजराइल के हमले में साथ देने वाले नाटो सदस्य देशों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने कहा कि इन देशों को बताना चाहिए कि उन्होंने इस सैन्य कार्रवाई का समर्थन क्यों किया।

वेनेजुएला में फिर भूकंप के झटके, अब तक 920 मौतें

- करीब 3300 घायल, 51 हजार लापता; लोग खुद मलबा हटाकर अपनों को तलाश रहे

कराकस (एजेंसी)। दक्षिण अमेरिकी देश वेनेजुएला में 25 जून को आए दो भूकंप के बाद स्थानीय समयानुसार शुक्रवार दोपहर को एक और भूकंप आया। देश के उत्तरी तट के पास आए इस भूकंप की तीव्रता 4.9 मापी गई है। रॉयटर्स के मुताबिक, राजधानी कराकास और माराके में भी झटके महसूस किए गए। इधर, पिछले भूकंप के तीन दिन बाद मरने वालों की संख्या बढ़कर 920 हो गई है। 3360 से ज्यादा घायल हैं, जबकि 51,700 से ज्यादा लोग लापता हैं। अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि अब तक 243 लोगों को जिंदा बचाया गया है। मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है। कई इलाकों में राहत टीमों की कमी के कारण लोग परिजन को ढूंढने के लिए खुद मलबा हटा रहे हैं।

एमपी हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

आईएएस अफसर पर लगा 25 हजार का जुर्माना, खुद की जेब से देने होंगे

जबलपुर (नप्र)। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने नौकरशाही के लापरवाह रवैये पर कड़ा रुख अपनाया है। अदालत ने खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव रश्मि अरुण शमी द्वारा पेश की गई गलत अनुपालन रिपोर्ट को बेहद गंभीरता से लिया है। कोर्ट ने आईएएस अधिकारी पर 25,000 रुपये का व्यक्तिगत जुर्माना ठोकते हुए आदेश दिया है कि यह राशि 7 दिनों के भीतर हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के खाते में जमा की जाए। कोर्ट ने स्पष्ट लहजे में कहा कि इस जुर्माने की भरपाई सरकारी खजाने से कतई नहीं होगी।

वरिष्ठ अधिकारी से ऐसी उम्मीद नहीं

सुनवाई के दौरान एसीएस रश्मि अरुण शमी ने कोर्ट से बिना शर्त माफी मांगते हुए अपनी त्रुटिपूर्ण रिपोर्ट वापस लेने की गुहार लगाई। हालांकि, एकलपीठ ने उनके इस रवैये पर गहरी नाराजगी जताई।

अतिरिक्त मुख्य सचिव जैसे शीर्ष और जिम्मेदार पद पर बैठे वरिष्ठ अधिकारी से ऐसी त्रुटिपूर्ण और गुमराह करने वाली अनुपालन रिपोर्ट की अपेक्षा बिल्कुल नहीं की जा सकती। सुधार का मौका दिया जा रहा है, लेकिन जवाबदेही तय करने के लिए जुर्माना जरूरी है।

नियमितीकरण के नाम पर स्थायी कर्मी बनाने का खेल

यह पूरा मामला मनीष व्यास और अन्य कर्मचारियों की अवमानना याचिका से जुड़ा है। याचिकाकर्ताओं के वकील ने कोर्ट को बताया कि 27 मार्च 2025 को हाईकोर्ट ने इन कर्मचारियों के नियमितीकरण पर विचार करने का आदेश दिया था। इसके बावजूद, विभाग ने चालाकी दिखाते हुए 11 जून 2026 को एक नया आदेश जारी किया और पुरानी विनियमितीकरण योजना के तहत इन्हें महज स्थायी कर्मी घोषित कर दिया। कोर्ट के मूल आदेश यानी नियमितीकरण पर कोई ठोस फैसला नहीं लिया गया, जिसे अदालत ने आदेश की अवहेलना माना।

अस्पताल में मरीज ने फांसी लगाई, मौत

बाथरूम में फंदे पर लटका मिला शव, पुलिस ने शुरू की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कजलीखेड़ा थाना क्षेत्र स्थित कुशाभाऊ ठाकरे अस्पताल में भर्ती एक मरीज शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात बाथरूम में फांसी लगा ली। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

कजलीखेड़ा थाने के सब-इंस्पेक्टर महेश मांझी ने बताया कि मृतक की पहचान सागर निवासी दीपक शुक्ला (48) के रूप में हुई है। वह पेशे से किसान थे। परिजनों के अनुसार उनकी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या का इलाज चल रहा था, जिसके चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

बाथरूम में मिला था अचेत- पुलिस के मुताबिक गुरुवार देर रात दीपक अस्पताल के बाथरूम में गए थे। काफी देर तक बाहर नहीं आने पर अस्पताल स्टाफ और परिजनों ने उन्हें देखा तो वे अचेत अवस्था में मिले। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

मौके से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और परिजनों के बयान के आधार पर पूरे घटनाक्रम की जांच की जाएगी। फिलहाल मर्ग कायम कर सभी पहलुओं से मामले की जांच की जा रही है।

महाराष्ट्र में टीईटी पेपर लीक, आज एग्जाम होना था

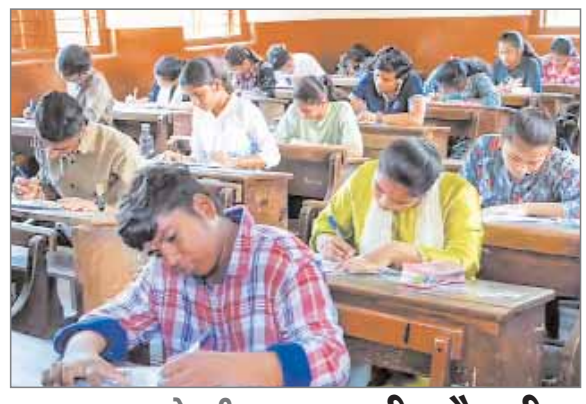

- सरकार ने परीक्षा रद्द की, पेपर ठाणे से हुआ बरामद
- सरकारी टीचर्स के लिए यह परीक्षा है बेहद जरूरी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में शिक्षक पात्रता परीक्षा का क्वेश्चन पेपर करीब 24 घंटे पहले लीक हो गया। एग्जाम रविवार को होना था। महाराष्ट्र स्टेट एग्जामिनेशन काउंसिल ने इसके बाद परीक्षा स्थगित कर दी है। नई तारीखों का ऐलान बाद में किया जाएगा। पुलिस के मुताबिक, क्वेश्चन पेपर लीक की सूचना के बाद ठाणे के भिवंडी इलाकों के कई जगहों पर छापेमारी की। इसके बाद एग्जामिनेशन काउंसिल के अफसरों को बुलाया और जब्त पेपर को वेरिफाई कराया गया पुलिस ने बताया कि इस मामले में कई लोगों को हिरासत में लिया है। हालांकि संख्या नहीं बताई है।

नीट और यूपी पुलिस भर्ती का भी पेपर लीक हुआ

पिछले 5 साल में देश में 9 बड़े पेपर लीक के मामले सामने आए हैं। इनमें राजस्थान रीट, यूपी पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा और हाल ही में मई 2026 में हुए नीट यूजी जैसे बड़े एग्जाम्स शामिल हैं। सुप्रीम कोर्ट ने 29 मई को आदेश दिया था कि स्कूलों में काम कर रहे शिक्षकों के लिए टीचर इलिजिबिलटी टेस्ट पास करना अनिवार्य है। कोर्ट ने टीईटी पास करने की समय सीमा 31 अगस्त 2027 से बढ़ाकर 31 अगस्त 2028 कर दी। हालांकि कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इसके बाद कोई और समय नहीं दिया जाएगा। कोर्ट ने कहा, बिना टीईटी योग्यता वाले शिक्षक सेवा में बने रहे तो इसका असर आने वाली पीढ़ियों की शिक्षा पर पड़ेगा।

उत्तराखंड के चमोली में बादल फटा, भारी तबाही

- घर और दुकानों में मलबा घुसा, 22 राज्यों में पहुंचा मानसून
- एमपी-झारखंड में आंधी-बिजली से 16 मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तराखंड के चमोली जिले में शुक्रवार को तेज बारिश के बाद बादल फट गया। इससे इलाके के कई घरों और दुकानों में मलबा घुस गया। कई गाड़ियां भी मलबे में फंस गईं। इधर मध्य प्रदेश के बालाघाट में बिजली गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई। वहीं, देवास में आंधी-बारिश से मकान की बालकनी का हिस्सा गिर गया, इस हादसे में 2 महिलाओं की मौत हो गई। झारखंड में भी बिजली गिरने से 10 और छत्तीसगढ़ में दो लोगों की मौत हो गई। मानसून ने देश के 22 राज्यों को कवर कर लिया है। 5 जुलाई तक बाकी राज्यों को कवर कर सकता है। यूपी में मानसून 8 दिन लेट है। यह आमतौर पर 20 जून तक आ जाता है लेकिन इस बार 15 दिनों से बिहार बॉर्डर पर रुका हुआ है। यह अगले 2 दिन में बिहार बॉर्डर से प्रदेश में एंट्री कर सकता है। मध्य प्रदेश में एंट्री लेने के बाद मानसून ठहर गया है। पिछले 3 दिन से आगे नहीं बढ़ा है। इसके आगे बढ़ने का इंतजार 2-3 दिन और बढ़ गया है। शुक्रवार को सिवनी में 50 एमएम बारिश हुई। शाजापुर के शुजालपुर, अकोदिया समेत आसपास के इलाकों में तेज बारिश हुई। उज्जैन में 38 एमएम बारिश हुई। यूपी में प्री-मानसून ऐक्टिव है।

अब भारत से होगा इलेक्ट्रॉनिक कॉम्पोनेंट्स का निर्यात: योगी

- ग्रेटर नोएडा में बोले योगी- 9,228 करोड़ की परियोजनाओं की दी सौगात

नोएडा (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को ग्रेटर नोएडा पहुंच गए। उन्होंने यमुना सिटी और नोएडा की कुल 9,228 करोड़ रुपये की औद्योगिक एवं विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया।

यमुना सिटी सेक्टर-10 स्थित इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर में 6,750 करोड़ रुपये के निवेश वाली तीन कंपनियों की परियोजनाओं का भी शिलान्यास किया। इस दौरान सीएम योगी ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा- दुनिया से जिन इलेक्ट्रॉनिक कॉम्पोनेंट्स का भारत आयात करता है, अब उन्हें देश में बनाकर दुनिया को निर्यात करने का लक्ष्य है।

- **सरकार की सिंगल विंडो व्यवस्था ने निवेश को गति दी-** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था लगातार आगे बढ़ रही है और दुनिया भारत पर भरोसा जता रही है। उन्होंने कहा कि दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधि स्वयं उत्तर प्रदेश आए और यहां निवेश किया। यह भारत की आक्रामक आर्थिक रणनीति और निवेश के अनुकूल माहौल का उदाहरण है। उन्होंने कहा कि जो उत्तर प्रदेश कभी गलत कारणों से जाना जाता था, आज वही प्रदेश देश और दुनिया के निवेशकों को आमंत्रित कर रहा है। सरकार की सिंगल विंडो व्यवस्था ने निवेश को गति दी है।

- सोनिया गांधी बोलीं- इजराइली शासन वहां नरसंहार कर रहा

गाजा पर मोदी सरकार की चुप्पी निंदनीय व समझ से परे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने गाजा के मामले में नरेन्द्र मोदी सरकार की निरंतर चुप्पी पर सवाल उठाते हुए शनिवार को कहा कि भारत को फलस्तीनियों के समर्थन में स्पष्ट और मुखर रुख अपनाना चाहिए तथा गाजा और वेस्ट बैंक में हो रही घटनाओं पर वैश्विक जनमत के अनुरूप प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

सोनिया गांधी ने एक अंग्रेजी दैनिक के लिये लिखे लेख में संयुक्त राष्ट्र की स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय जांच आयोग की हालिया रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया कि गाजा में बच्चों को सुनियोजित तरीके से निशाना बनाया जा रहा है और वहां की मानवीय स्थिति बेहद भयावह हो चुकी है।

हजारों बच्चों की मौत चिंता का विषय- उन्होंने कहा कि हजारों बच्चों की मौत और तबाही का शिकार हो गए हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

94 पन्नों की यह रिपोर्ट पढ़ना अत्यंत पीड़ादायक

इस आयोग की अध्यक्षता अब प्रतिष्ठित भारतीय न्यायविद न्यायमूर्ति एस. मुरलीधर (सेवानिवृत्त) कर रहे हैं, सोनिया गांधी के अनुसार, 94 पृष्ठों की यह रिपोर्ट पढ़ना अत्यंत पीड़ादायक है। उन्होंने कहा कि इसमें गाजा में इजराइल द्वारा की गई तबाही और उसके पीछे निहित नरसंहार की मंशा का भयावह विवरण दिया गया है। कम से कम 20,000 बच्चों की हत्या की जा चुकी है और अन्य 44,000 बच्चे घायल हुए हैं, जिनमें से अनेक जीवन भर के लिए अपंग हो गए हैं। बच्चों को निशाना बनाना कोई आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति है।

27 फीसदी बच्चों के सिर और गर्दन पर गोली लगने के प्रमाण

सोनिया गांधी ने लिखा कि मारे गए या घायल हुए लोगों में 27 प्रतिशत बच्चे हैं और अनेक के सिर तथा गर्दन में गोली लगने के प्रमाण मिले हैं। गाजा के 97 प्रतिशत विद्यालय नष्ट कर दिए गए हैं। बाल चिकित्सा अस्पतालों सहित स्वास्थ्य अवसंरचना को भी तबाह कर दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप गर्भपात और प्रसव संबंधी जटिलताओं में 300 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। कांग्रेस नेता ने कहा कि कई पश्चिमी देशों ने फलस्तीनी राष्ट्र को मान्यता दी है, कई देशों ने इजराइल के साथ अपने संबंधों की समीक्षा की है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इजराइल की कार्रवाई को लेकर गंभीर सवाल उठाए जा रहे हैं, लेकिन भारत इस मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए है।

ड्रोन के जरिए ड्रग्स सप्लाई में 100 गुना उछाल

पंजाब में सबसे ज्यादा मामले, एनसीबी की रिपोर्ट

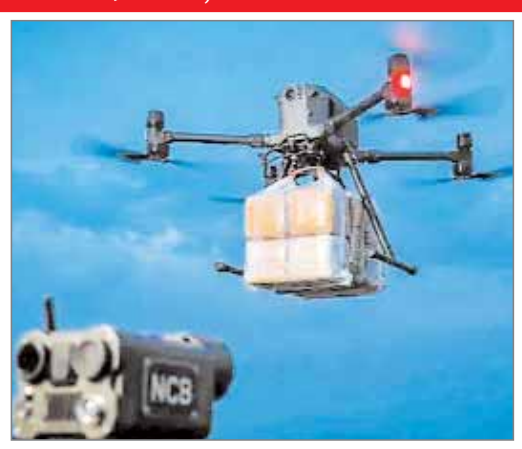

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में ड्रग तस्करी के खिलाफ जंग अब आसमान तक पहुंच गया है। पिछले 5 सालों में ड्रोन से तस्करी की घटनाओं में 100 गुना बढ़ोतरी हुई है। सुरक्षा एजेंसियों के सामने यह एक बेहद आधुनिक और तकनीकी रूप से मजबूत चुनौती बनकर उभरा है। दरअसल, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा जारी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के 2025 के सालाना आंकड़ों के मुताबिक, ड्रोन से जुड़े रिकॉर्ड 305 मामले सामने आए, जिनमें 468 किलोग्राम नशीले पदार्थ बरामद किए गए। ड्रग तस्करी के 305 घटनाओं में से 298 अकेले पंजाब में हुईं यानी देश में ड्रोन से ड्रग तस्करी का सबसे बड़ा केंद्र पंजाब बन गया है, यहां भारत-पाकिस्तान सीमा के रास्ते बड़े पैमाने पर हाई-प्यूरिटी हेरोइन और मेथमफेटामाइन (मेथ) जैसी खतरनाक ड्रग्स भारत भेजी जा रही हैं।

ड्रग तस्करी के मामले में 100 गुना बढ़ोत्तरी

ड्रोन से ड्रग तस्करी के मामले में 98 फीसदी की भारी बढ़ोतरी और 2021 (जब सिर्फ तीन मामले दर्ज किए गए थे) के बाद से ड्रोन घटनाओं में 100 गुना बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा, 2021 और 2025 के बीच फार्मास्युटिकल दवाओं के गलत इस्तेमाल (डायवर्जन) में कुल मिलाकर 77 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। सालाना जब्ती की मात्रा 2,43,111 किलोग्राम के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद थोड़ी कम होकर 2,37,390 किलोग्राम पर आ गई। पंजाब में नशीले पदार्थों के सेवन की नई लहर देखने को मिल रही है। यहां सबसे ज्यादा 8.95 लाख कोडीन वाली कफ सिरप की बोतलें पकड़ी गईं। इसके अलावा ब्यूप्रेनॉर्फिन, ट्रामाडोल और अल्प्राजोलम जैसी दवाओं की अवैध सप्लाई भी बड़े स्तर पर हो रही है।

कूरियर और डाक से भी हो रही तस्करी

हवाई रास्तों पर निगरानी तो बढ़ा दी गई है, लेकिन कूरियर और डाक से होने वाली तस्करी अब भी बड़ी समस्या है। मामलों की संख्या 174 पर स्थिर होने के बावजूद, पोस्टल चैनलों के जरिए जब्त किए गए नशीले पदार्थों की मात्रा 972 किलोग्राम थी। एनसीबी की रिपोर्ट में गुप्त सिंथेटिक ड्रग प्रयोगशालाओं के बढ़ने का भी जिक्र है। जांच एजेंसी ने पिछले तीन वर्षों के आकड़ों से भी अधिक 30 गुप्त निर्माण प्रयोगशालाओं को नष्ट किया और 102 लोगों को गिरफ्तार किया। आंकड़ों से पता चलता है कि महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश में बड़ी संख्या में मौजूद इन ठिकानों पर एफेड्रिन ड्रग मिलता है।

सरकार ने शुरू की प्रमोशन की तैयारी, 29 जून को बुलाई 20 विभागों की बैठक

मप्र के 4.5 लाख कर्मचारियों के लिए बड़ी खबर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के करीब 4.5 लाख सरकारी कर्मचारियों के लिए एक बड़ी और राहत भरी खबर है। हाईकोर्ट में लंबे समय से लंबित पदोन्नति विवाद के बावजूद, राज्य सरकार ने राज्य में प्रमोशन की रुकी हुई प्रक्रिया को दोबारा शुरू करने के लिए अपने प्रयास तेज कर दिए हैं। मुख्य सचिव के कड़े निर्देशों के बाद सामान्य प्रशासन विभाग पूरी तरह एक्टिव हो गया है। विभाग ने आगामी 29 जून को 20 प्रमुख विभागों के अधिकारियों की एक हाई-लेवल बैठक बुलाई है, ताकि क्रेडर डिटेल्स और प्रमोशन के मानदंडों को अंतिम रूप दिया जा सके।

साल 2016 से अटका है मामला- मध्य प्रदेश में साल 2016 से प्रमोशन की प्रक्रिया सुप्रीम कोर्ट में लंबित आरक्षण विवाद के कारण पूरी तरह ठप पड़ी थी। गतिरोध को तोड़ने के लिए सरकार ने 17 जून 2025 को मध्य प्रदेश लोक सेवा पदोन्नति नियम-2025 को मंजूरी दी थी। हालांकि, इसे जबलपुर हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। हाल ही में वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों ने कानूनी विशेषज्ञों से सलाह ली है, जिन्होंने हरी झंडी देते हुए कहा है कि क्योंकि हाईकोर्ट ने नए नियमों पर कोई सीधा स्टे नहीं लगाया है, इसलिए सरकार इस प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकती है।

कर्मचारी संगठनों ने खड़े किए सवाल- सरकार के इस कदम से जहां युवाओं के लिए नए रोजगार और भर्ती के रास्ते खुलेंगे, वहीं दूसरी ओर कर्मचारी संगठनों ने इस पर तीखी आपत्ति दर्ज कराई है। संगठनों का कहना है कि सरकार ने पहले कोर्ट को कुछ और आश्वासन दिया था।

विभागों को निर्देश- सभी 20 विभागों को निर्देश दिए गए हैं कि वे 29 जून की बैठक में अपने क्रेडर, स्वीकृत पदों, प्रमोशन की योग्यताओं और खाली पदों का पूरा ब्योरा लेकर आएं।

असर- इस फैसले से न केवल प्रशासनिक स्तर पर खाली पद भरे जाएंगे, बल्कि पिछले एक दशक से अपनी बारी का इंतजार कर रहे लाखों कर्मचारियों को बड़ी राहत मिल सकती है।

पेंशनर्स कल्याण मंडल के पुनर्गठन आदेश में संशोधन की मांग

भोपाल। मध्य प्रदेश वित्त विभाग ने प्रदेश के पंजीकृत सक्रिय पेंशनर संगठनों की अनदेखी कर पेंशनर कल्याण मंडल के पुनर्गठन पर संगठन ने गहरी आपत्ति की है । पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने बताया कि मध्यप्रदेश पेंशनर कल्याण मंडल के पुनर्गठन संबंधी अधिसूचना में एक ही संगठन, जिसका वर्ष 2023 में पंजीयन निरस्त हो चुका है, के पांच व्यक्तियों सहित अन्य दो व्यक्ति जो पदाधिकारी नहीं है, को भी शामिल कर मंडल के मूल उद्देश्य को आहत किया है।

आमोद सक्सेना ने अपर मुख्य सचिव वित्त को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि पेंशनर कल्याण मंडल का उद्देश्य तभी सार्थक होगा जब उसमें पेंशनरों के प्रांतीय स्तर के सक्रिय वास्तविक प्रतिनिधियों को पर्याप्त स्थान दिया जाए । प्रांतीय उपाध्यक्ष शैलेंद्र श्रीवास्तव ने पेंशनरों के व्यावहारिक सुझावों एवं विभिन्न समस्याओं का प्रभावी निराकरण करने के लिए प्रांतीय स्तर के पंजीकृत पेंशनर संगठन के सक्रिय पदाधिकारियों को पेंशनर कल्याण मंडल में शामिल कर शीघ्र बैठक बुलाने की मांग की है ।

उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने पी.के. स्कूल के निर्माणाधीन नवीन भवन एवं प्रगति कार्यों का निरीक्षण किया

भोपाल। उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने रीवा के सिरमौर चौराहा स्थित प्रवीण कुमारी कन्या सांदीपनि विद्यालय (पी.के. स्कूल) के निर्माणाधीन नवीन भवन का निरीक्षण कर प्रगति कार्यों की जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री राइज/सांदीपनि विद्यालय योजना के अंतर्गत विकसित हो रहा यह अत्याधुनिक विद्यालय आधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं, खेल संसाधनों, हरित प्रौद्योगिकी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था से सुसज्जित होगा। इससे क्षेत्र के हजारों विद्यार्थियों को उत्कृष्ट एवं आधुनिक शिक्षण वातावरण उपलब्ध होगा। निर्माण कार्य को उच्च गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कर विद्यार्थियों के लिए शीघ्र प्रारंभ किए जाने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए।

धार, रतलाम में तेज बारिश, 41 जिलों में अलर्ट

सीहोर में बिजली गिरने से दो किसान झुलसे, भोपाल-उज्जैन में 2-3 दिन में पहुंचेगा मानसून

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी हिस्से के 15 जिलों में एंट्री करने के बाद मानसून ठहर गया है। 3 दिन से मानसून आगे नहीं बढ़ा है, जबकि अगले 2 से 3 दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

मौसम केंद्र के मुताबिक, मानसून आगे बढ़ा तो पहले यह भोपाल-उज्जैन संभाग में पहुंचेगा। आखिरी में ग्वालियर-चंबल में दस्तक देगा। बता दें कि 24 जून को प्रदेश में मानसून एंटर हुआ था। आलीराजपुर, इंदौर, हरदा, धार, बैतूल, खंडवा, बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, खरगोन, सिवनी, बालाघाट, मंडला, बड़वानी, डिंडौरी में 24 जून को मानसून के आने की घोषणा हो गई थी, लेकिन इसके बाद यह आगे नहीं बढ़ा। मौसम विभाग ने बताया कि अगले 2-3 दिन में मध्य प्रदेश के कुछ और हिस्सों में मानसून के आगे बढ़ने की परिस्थितियां अनुकूल है।

इन जिलों में बारिश का अनुमान

मौसम विभाग ने भोपाल, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, विदिशा, इंदौर, झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, उज्जैन, रतलाम, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा,

जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडौरी, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, मऊगंज, मैहर, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, सागर, पन्ना, दमोह और छतरपुर में बारिश होने का अनुमान जताया है।

ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, नीमच, मंदसौर, निवाड़ी और टीकमगढ़ जिले में कहीं-कहीं बारिश हो सकती है।

रतलाम में झमाझम बारिश, गर्मी से राहत- रतलाम में भी दोपहर करीब 1 बजे के बाद मौसम ने अचानक करवट ली। आसमान में काले घने बादल छा गए और तेज गड़गड़ाहट के साथ मूसलधार बारिश शुरू हो गई। कुछ ही देर में शहर की सड़कों पर पानी बहने लगा।

धार में बाग में 40 मिनट तक बारिश

धार जिले की कुक्षी तहसील के बाग क्षेत्र में आज दोपहर मानसून ने दस्तक दे दी। दोपहर करीब 2 बजे अचानक मौसम बदला और काले बादल छा गए। बादलों की गड़गड़ाहट के साथ करीब 40 मिनट तक झमाझम बारिश हुई।

सीहोर में खेत में दवा छिड़क रहे किसानों पर बिजली गिरी

सीहोर जिले में खेत में काम कर रहे दो किसान बिजली गिरने से झुलस गए। घटना उस समय हुई जब दोनों किसान खेत में फसल पर दवा का छिड़काव कर रहे थे। घायलों की पहचान 26 वर्षीय भारत जांगड़ा और दौलत सिंह के रूप में हुई। दोनों लसूडिया बोडी के रहने वाले हैं।

मुख्यमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग दिवस पर दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग दिवस पर प्रदेश के सभी उद्यमियों, स्टार्ट-अप क्रिएटर्स, कारीगरों एवं श्रमिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आप सभी के परिश्रम, नवाचार और उद्यमशीलता से मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास, निवेश और रोजगार सृजन के नए आयाम स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि एमएसएमई आत्मनिर्भर भारत के साथ-साथ विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण की भी मजबूत आधारशिला है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रवींद्र भवन, भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस 2026 कार्यक्रम में प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

राम के नाम पर आस्था से विश्वासघात

(नितिन वैद्य)

व्यथा की पराकाष्ठा है यह। हाँ, मैं व्यथित हूँ। पर अकेला नहीं ,भारत का हर सनातनी आज लज्जा और क्रोध से भरा बैठा है। जिस राम मंदिर के लिए 493 वर्षों तक पूर्वजों ने शीश कटाए, जिस मंदिर की एक-एक ईंट में ,साधु संतों ,नागा साधु निहंग सिखों और लाखों बलिदानियों का रक्त है, जिस मंदिर को सदियों की प्रतीक्षा और सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय के बाद हमने पाया ,उसी राम के दान-पात्र पर हाथ साफ किया गया! राम केवल मूर्ति नहीं, राम इस राष्ट्र की आत्मा हैं, चेतना हैं, चरित्र हैं। भारत का कण-कण राममय है। और उसी राम के घर में चोरी? यह केवल धन की चोरी नहीं, हमारे विश्वास, हमारी तपस्या, हमारे स्वाभिमान की डकैती है।

सोचकर रूह काँप जाती है कोई ऐसा कैसे कर सकता है? क्या चोरी करते हुए उसके हाथ नहीं काँपे? क्या उसने एक पल को भी नहीं सोचा कि वह उस राम का धन चुरा रहा है जिसने शबरी के जूठे बेर खाए? क्या दान की मर्यादा, धर्म की लक्ष्मण-रेखा उसे याद नहीं आई? अरे, तुझे अपनी आने वाली सात पीढ़ियों का नहीं सोचा? तेरा यह पाप तेरे बच्चों के माथे का कलंक बनेगा। इतिहास थूकेगा तुम पर। तुमने केवल पैसे नहीं चुराए, तुमने उन करोड़ों रामभक्तों के आँसू चुराए हैं जिन्होंने एक-एक रुपया जोड़कर मंदिर के लिए दिया था। तुमने उन माताओं की उम्मीद चुराई है जिन्होंने अपने गहने बेचकर दान दिया।

सबसे बड़ा घाव यह है कि तुम्हारे पाप ने पूरे सनातन समाज को शर्मसार कर दिया।जिन्होंने जीवन खपा दिया राम काज में, जिन्होंने लाठियाँ खाईं, जेल गए, प्राण दिए ,उनके त्याग पर तुमने कालिख पोत दी। और तो और, दो प्रमुख सनातनी संगठनों को बिना कारण बदनामी का विष पीना पड़ रहा है। मुट्ठीभर लालची चोरों ने पूरे संगठन, पूरी विचारधारा को कठघरे में खड़ा कर दिया। यह चोरी नहीं, सनातन के माथे पर कील ठोकने जैसा कुकृत्य है। भारत राष्ट्र आहत है, क्षुब्ध है, आक्रोशित है।

अब मौन तोड़ने का समय नहीं, दंड देने का समय है।

जिन संगठनों की आड़ में यह पाप हुआ, अब उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि वे दूध का दूध, पानी का पानी करें। पहला काम – एक पल भी गंवाए बिना इन चंदा चोरों को चिन्हित कर पुलिस के हवाले किया जाए। दूसरा ,इन पर ऐसी सख्त धाराओं में मुकदमा चले कि आने वाली पीढ़ियाँ काँप जाएँ। कोई सिफारिश नहीं, कोई बचाव नहीं, कोई लीपापोती नहीं। राम के नाम पर रोटी सेंकने वाले गद्दारों के लिए समाज में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। इन्हें कठोरतम सजा दिलवाना ही राम के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

समाधान केवल सजा नहीं, व्यवस्था का शुद्धिकरण है

अब समय आ गया है कि राम मंदिर का एक-एक पैसा जनता की आँखों के सामने हो। डिजिटल, पारदर्शी, ऑडिटेड व्यवस्था बनाई जाए। हर दान की ऑनलाइन रसीद, हर खर्च का सार्वजनिक ब्यौरा, त्रैमासिक ऑडिट रिपोर्ट वेबसाइट पर , ताकि फिर कोई पापी हाथ दान-पात्र की तरफ बढ़ाने से पहले सौ बार सोचे। यह लड़ाई केवल चोरों से नहीं, व्यवस्था की खामियों से भी है। संगठनों को आगे आकर खुद यह शुचिता अभियान चलाना होगा। तभी दाग धुलेगा, तभी विश्वास लौटेगा।

याद रखो ,राम का घर लुटेरों की शरणस्थली नहीं बन सकता।जिसने राम के नाम पर विश्वासघात किया, उसका सर्वनाश निश्चित है। अब या तो चंदा चोर जेल जाएँगे, या सनातनी समाज का आक्रोश सड़कों पर दिखेगा। न्याय होगा, तभी राम प्रसन्न होंगे।

जय श्री राम

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो।

राममंदिर चोरी मामले में चंपत राय पर एफआईआर हो

उज्जैन में दिग्विजय सिंह बोले- चोरी हुए दान की घटना को बताने कांग्रेस घर-घर जाएगी

उज्जैन (नप्र)। दिग्विजय सिंह ने राम मंदिर में दान चोरी के मामले को लेकर शनिवार को उज्जैन में केंद्र सरकार, आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद पर तीखा हमला बोला। उन्होंने राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय को भ्रष्ट बताते हुए उनके खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज करने की मांग की। साथ ही कहा कि राम मंदिर ट्रस्ट का गठन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है, इसलिए इसकी जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह शुक्रवार रात उज्जैन पहुंचे थे और देवास रोड स्थित सर्किट हाउस में रात्रि विश्राम किया। शनिवार सुबह उन्होंने सर्किट हाउस में प्रेस वार्ता कर राम मंदिर, महाकाल मंदिर की व्यवस्था और जमीन घोटाले को लेकर सरकार को घेरा। उन्होंने इंदौर-उज्जैन मेट्रोपॉलिटन रीजन के नामकरण को लेकर चल रहे विवाद पर भी कहा कि इसमें इंदौर का नाम पहले होना चाहिए। दिग्विजय सिंह ने कहा कि वे मुख्यमंत्री मोहन यादव को सलाह देने उज्जैन आए हैं। उन्होंने कहा, इतने विभाग आपके पास हैं, गड़बड़ी अधिकारी करेंगे और जवाब आपको देना पड़ेगा। ऐसा मत करिए, क्योंकि हम आपको छोड़ने वाले नहीं हैं।

आरएसएस और विहिप को धर्म से नहीं, सत्ता से मतलब- राम मंदिर में दान चोरी के मामले को लेकर दिग्विजय सिंह ने प्रधानमंत्री मोदी को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद को धर्म और धार्मिक कार्यों से कोई मतलब नहीं है, उन्हें सिर्फ सत्ता से मतलब है। उन्होंने कहा कि इन संगठनों पर कोई कानून लागू नहीं होता और ये सनातनियों को ठग रहे हैं।

उन्होंने कहा, चंपत राय कौन हैं? उत्तर प्रदेश के रहने वाले हैं। धर्म से उनका कोई लेना-देना नहीं है।

प्राण प्रतिष्ठा में परंपरा का पालन नहीं हुआ

दिग्विजय सिंह ने राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के दौरान एक कुंवारा और एक तलाकशुदा व्यक्ति पूजन में बैठ गया, जबकि परंपरा के अनुसार सपत्नीक पूजन होना चाहिए था। उन्होंने कहा कि चंपत राय समेत सभी ट्रस्टियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जानी चाहिए।

राम मंदिर चोरी का मुद्दा गांव-गांव ले जाएगी कांग्रेस

दिग्विजय सिंह ने कहा कि कांग्रेस राम मंदिर में दान चोरी के मुद्दे को गांव-गांव लेकर जाएगी। उन्होंने बताया कि उज्जैन जिले की 609 पंचायतों में कांग्रेस ने दल और मंडल स्तर पर समितियां बनाई हैं, जो घर-घर जाकर लोगों को इस मामले की जानकारी देंगी।

वेंडर डेवलपमेंट प्रोग्राम एवं गुणवत्ता सत्र संपन्न

उद्यमियों को भेल और गेल सहित मानक ब्यूरो से मिले अनेक टिप्स

भोपाल (नप्र)। अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस पर शनिवार को रवीन्द्र भवन, भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में वेंडर डेवलपमेंट प्रोग्राम तथा उत्पाद गुणवत्ता के लिए भारतीय मानक के लिएसशक्त उद्यमी, समृद्ध मध्यप्रदेश–हार्ट ऑफ इंडिया, हार्ट ऑफ ग्रोथ की थीम पर हुए सत्र में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, प्रतिष्ठित निजी कंपनियों एवं संस्थागत खरीदारों से जोड़ने के साथ-साथ उत्पाद की गुणवत्ता, भारतीय मानकों और प्रमाणन प्रक्रियाओं के संबंध में व्यावहारिक जानकारी दी गई।

सत्र में विशेष रूप से बीएचईएल, गेल, एनसीएल और पावरग्रिड सहित सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख उपक्रमों एवं प्रतिष्ठित निजी कंपनियों से प्रदेश के एमएसएमई उद्यमियों ने सीधा संवाद किया। भारतीय मानक ब्यूरो के श्री मोहम्मद रिजवान तथा श्री मोहम्मद तौसीफ ने दी मानकीकरण, प्रमाणन और शुल्क रियायतों की जानकारी दी।भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा विश्व बैंक की आरएएमपी योजना के अंतर्गत वेंडर डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

बीएचईएल के विभाग अध्यक्ष पंकज कुमार झा एवं प्रबंधक सुश्री मीनाक्षी सिंह ने संस्थान की खरीद प्रक्रिया, वेंडर पंजीकरण व्यवस्था तथा एमएसएमई के लिए उपलब्ध खरीद अवसरों की जानकारी दी। उन्होंने प्रदेश के सक्षम उद्यमों को निर्धारित गुणवत्ता एवं तकनीकी मानकों के अनुरूप बीएचईएल की आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। की गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं के अनुरूप तैयार करता है।

घर में मिले रिटायर्ड दंपती के शव, हत्या की आशंका

शरीर पर चोट के निशान मिले, फोन पर आखिरी बार भाभी से बात हुई थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ऐशबाग थाना क्षेत्र के सुदामा नगर में एक बंद मकान से बुजुर्ग दंपती के शव मिले हैं। दो दिन तक घर से बाहर नहीं निकलने और मकान से तेज दुर्गंध आने पर किराएदार छात्रों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस दरवाजा तोड़कर अंदर पहुंची, जहां दोनों मृत मिले।

मृतकों की पहचान 64 वर्षीय हेमंत बारीक और उनकी 62 वर्षीय पत्नी शकुंतला बारीक के रूप में हुई है। हेमंत रेलवे से रिटायर्ड कर्मचारी थे, जबकि शकुंतला कस्तूरबा अस्पताल से नर्स के पद से रिटायर हुई थीं। जानकारी के मुताबिक, घर में केवल पति-पत्नी रहते थे। उनके मकान के एक हिस्से में छात्र किराए पर रहते हैं। दंपती की कोई संतान नहीं है। पहले बेटे के विदेश में रहने की जानकारी सामने आई थी। छात्रों ने बताया कि पिछले दो दिन से दंपती

घर से बाहर नहीं निकले थे। शुक्रवार को घर से तेज दुर्गंध आने पर पुलिस को सूचना दी।

पुलिस हत्या के एंगल से भी जांच कर रही- एसीपी- एडिशनल पुलिस कमिश्नर शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि घटनास्थल को सील कर दिया है। शवों पर चोट के निशान मिले हैं और दोनों शव पूरी तरह डीकंपोज्ड हो चुके हैं। हत्या के एंगल से भी जांच की जा रही है। पुलिस का कहना है कि मौत की वास्तविक वजह का पता पोस्टमॉर्टम और एफएसएल रिपोर्ट आने के बाद ही चलेगा।

भाभी को बताया था- आई चेकअप के लिए जाना है- हेमंत बारीक डाक पार्सल विभाग में क्लर्क रहे थे। उनकी पत्नी शकुंतला ने बीते बुधवार को आखिरी बार अपनी भाभी शिवानी से फोन पर बात की थी। उन्होंने बताया था कि पति की आंख में परेशानी है और उन्हें चेकअप के लिए कस्तूरबा अस्पताल ले जा रही हैं।

भाभी बोली- पति-पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता था- भाभी के मुताबिक, उस बातचीत में शकुंतला ने किसी अन्य परेशानी का जिक्र नहीं किया था। हालांकि उन्होंने बताया कि पति-पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता था।

ऑपरेशन से एक दिन पहले लगाया बेहोशी का इंजेक्शन, मौत

सागर में मरीज की पत्नी बोली- इयरफोन पर बात कर रही थी नर्स, सस्पेंड

भोपाल (नप्र)। सागर के बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज (बीएमसी) में मरीज देवेंद्र पाठक की मौत के मामले में प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में गंभीर लापरवाही सामने आई है। जांच में पाया गया कि जिस एनेस्थीसिया इंजेक्शन का इस्तेमाल अगले दिन ऑपरेशन के दौरान मरीज को बेहोश करने के लिए किया जाना था, उसे ड्यूटी पर मौजूद नर्स ने एक दिन पहले ही आईवी के जरिए लगा दिया। आरोप है कि इंजेक्शन लगाते समय नर्स ब्लूटूथ इयरफोन पर बात कर रही थी।

कॉलेज प्रबंधन ने प्रारंभिक जांच के आधार पर नर्स शिखा पटले को जांच पूरी होने तक निलंबित कर दिया है। वहीं, उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला ने पूरे मामले की जांच के आदेश देते हुए दोषी अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई

के निर्देश दिए हैं।

हाई-रिस्क इंजेक्शन से बिगड़ी थी हालत- देवेंद्र पाठक को गले में गांठ की शिकायत के बाद बीएमसी के ईएनटी विभाग में भर्ती कराया गया था। 13 जून को उनकी बायोप्सी होनी थी। इससे पहले 12 जून को अस्पताल स्टाफ ने परिजनों से ऑपरेशन के दौरान उपयोग होने वाला एट्राक्यूरियम बेसीलेट इंजेक्शन मंगवाया। आरोप है कि ड्यूटी पर मौजूद नर्स ने यह इंजेक्शन उसी दिन मरीज को आईवी के जरिए लगा दिया।

इंजेक्शन लगाते ही सांसें उखड़ने लगी- परिजनों के मुताबिक, कुछ ही मिनटों में मरीज की सांसें उखड़ने लगीं और हार्टबीट रुक गई। डॉक्टरों ने करीब 45 मिनट तक सीपीआर दिया और बाद में मरीज को वेंटिलेटर पर रखा। बीच में हालत में कुछ सुधार हुआ, लेकिन 23 जून की सुबह करीब साढ़े छह बजे उसकी मौत हो गई।

पत्नी ने कहा- नर्स मोबाइल में व्यस्त थी- मृतक की पत्नी रीता पाठक ने गोपालगंज थाने में शिकायत दर्ज कर निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि इंजेक्शन लगाते समय संबंधित नर्स मोबाइल फोन और ब्लूटूथ इयरफोन में व्यस्त थी, जिसके कारण इतनी बड़ी लापरवाही हुई।

एक्सपर्ट बोले- सिर्फ नर्स नहीं, सिस्टम की भी हो सकती है चूक

भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज के एनेस्थीसिया विशेषज्ञ के अनुसार, यदि किसी दवा को लेकर नर्स को जरा भी संदेह हो तो डॉक्टर या वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी से पुष्टि किए बिना उसे मरीज को नहीं देना चाहिए। आधुनिक मरीज सुरक्षा व्यवस्था में इसे स्टॉप एंड आस्क सिद्धांत कहा जाता है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे मामलों में केवल नर्स की गलती मान लेना पर्याप्त नहीं होगा। यह दवा वितरण, हाई-अलर्ट दवाओं के प्रबंधन, डबल वेरिफिकेशन, सुपरविजन, प्रशिक्षण और अस्पताल की मानक संचालन प्रक्रिया में खामियों की ओर भी संकेत करता है।

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

कलाकार रीनी धूमल और धूमिल कलाकृतियों का द्वंद्व

कला अजीब सी बेचैनी को खुद में समाहित किए होती है तो बहुत अधिक उम्मीदों की दानदाता भी होती है। द्वंद्वों का उधेड़बुन है तो गहरे अंधेरे के बाद का स्पष्ट उजाला भी है। कला रंगों के, भावों के, रूपों के या ऐसे ही और भी कुछ विशेष का संगुंफन तैयार करता है। कला का सफर एक विशेष सफर होता है। कला आवश्यक है सभी के जीवन में।

रंगों और रेखाओं का हाथ थामें एक अनजान सफ़र पर निकल जाना कोई साधारण बात नहीं होती, खोना होता है नींद, सुकून, लड़ना होता है बिपरीत में उठ खड़े हुए हाथों से जो अपने ही होते हैं पर बर्ताव नहीं होता अपना सा, जहाँ कलाकार और दर्शक का भी विशेष संबंध होता है। जहाँ कल्पना को पंख जरूर लग जाते हैं। पंख ही लग गये थे रिनी धूमल के सपनों को जो उनके कृतियों में अक्सर नजर भी आते हैं, रीनी धूमल गहरी सोच को गहराई के साथ अंकन करने में दक्ष थीं। उनके कृतियों में बीज गमले से बाहर झांकते हैं पौधों के रूप में और वहाँ सवार होती है एक और कल्पना।

गहरे रंगों के गहराई में डूबने के साथ ही दर्शक एक ऐसे यात्रा पर निकलता है जहाँ अनंत के गुंजाइश के साथ ही संवाद की भी पूरी संभावना होती है। जहाँ दर्शक दर्शन के गंभीरता को गंभीरता से समझ सकने में पूरी तरह सक्षम होते हैं। रेखाएं भी एकदम ही रहस्यमई होती हैं धूमल के कृतियों में पर महत्वपूर्ण यह है कि उनके कृतियों में स्त्रीपक्ष के संघर्ष की गाथा है, सफलता है और उम्मीदों के पंख पर उड़ने को तैयार स्वप्न है जिसकी बदौलत ही कलाकार रीनी धूमल लगातार अपनी कला यात्रा पर रहीं।

1972 में बड़ौदा से कला शिक्षा प्राप्त तथा 84 में अध्यापन कार्य में लग जाने वाली कलाकार रिनी धूमल शुरु से ही बहुत शालीन, मृदुभाषी और कला के विद्यार्थियों हेतु संकटमोचक की भूमिका में रहीं हैं और अलग-अलग माध्यमों में कार्य भी करती रहीं हैं।

अध्यापन क्षेत्र में भी आप नित नये कारनामें करती रहीं। आपकी कृतियाँ आपके व्यक्तित्व को बखूबी बयाँ करती है। खुरदुरे पृष्ठभूमि से बारीक खड़ी पंक्तियों का झाँकना, नारंगी, भुरे तथा ऑकर यलो जैसे रंगों

का सम्मोहनीय संयोजन, बिल्कुल एक ही स्ट्रोक में तैयार रेखांकन, टेढ़े-मेढ़े रेखाओं से तैयार बॉर्डर के बीच नये तरीके एवं शैली में तैयार मानवाकृतियाँ विशेषतः स्त्रियाँ उनमें भी नये रूप में देवी की पूरी श्रृंखला, जगह-जगह बेलबूटों के डिजाइन पूरे कृति को एकदम जीवंत बना देते हैं एकबारगी तो ऐसा लगता है जैसे बालुचरी साड़ियों पर तैयार की गयी हों कृतियाँ, पर ये महज भ्रम है। विषय हमारे आपके पास से ही है पर वैसा नहीं है जैसा हम और आप देखते हैं, विशेषता ये कि हम और आप एकटक बस और बस कृतियाँ निहारते रह जाते हैं। बिना किसी भूमिका के, बिना किसी बंधन के न जाने कौन सी डोर है जो आपके कृतियों को देखने में दर्शक घंटों बिता देते हैं। फूल-पौधे, गमले, बर्तन, पशु-पक्षी, देवी के रूप में धारण किये हुए अस्त्र-शस्त्र, गुस्सा थोड़ा अलग तरीके के जानवर की सवारी सभी के संयोजन में गजब का सामंजस्य है। रंगों को थोड़ा और धूमिल मान लिया जाय तो कृतियां प्राचीन मटमैले कृतियों के ज्यादा नजदीक दिखाई पड़ती हैं पर अच्छी बात ये है कि हमारे आपके जैसा ना होकर भी हमारे आपके बीच से ही दिखती हैं। रिनी धूमल जी के कृतियों में माथे पर का चटख रंग किसी विशेष इच्छा को दर्शाता समझ में आता है। साधारण सी दिखने वाली कृतियों में सौन्दर्यबोध भरा पड़ा है। आंख होंठ नाक अधिकतर कृतियों में एक से हैं पर भाव पक्ष प्रबल है, मौन, क्रोध, के साथ ही आंखों में छिपे हजारों प्रश्न साफ-साफ देखे जा सकते हैं। 15 सितंबर 1948 को जन्मी रिनी धूमल पेंटिंग, प्रिंटमेकिंग के अलावा मिट्टी ,कांसे, ग्लासपेंटिंग जैसे विभिन्न माध्यमों में भी सक्रिय रही हैं, पेंटिंग में भी विविध माध्यमों जैसे कैनवास पर तैल रंग, सिरेमिक पर मिक्स मीडिया, पेपर पर जलरंग काली स्याही तथा चारकोल, पर आपने कार्य किया है। किसी विशेष सीमा में बंधकर ना तो आप रही हैं और ना ही आपकी कृतियां। चित्र 'द फ्लाइट' (पेपर पर जलरंग) में स्त्रियो की उड़ान, उम्मीद से भरी आंखें, उड़ने को आतुर पंख, पौधे से उत्पन्न स्त्री, संसार हेतु उम्मीद की द्योतक है पीले और नारंगी रंग आपके विशेषता के अनुरूप ही नजर आये हैं। आपके प्रमुख चित्रों में 'काली' तथा देवी जैसे कृतियों को गिना जा सकता है। स्त्री पात्र सामाजिक ताने-बाने से परे हर मुश्किल पल को आसानी से सम्हाल लेने को आतुर बैठी हैं, कहीं भी संशय एवं भय जैसी बात नहीं है, सभी को साथ लिये सत्ता सम्हाल लेने का दमखम भी है। आप के कृतियों में स्त्रियां गहरे भाव युक्त आंखों में दिखाई पड़ती हैं, बेवसी और व्याकुलता को सफलता में बदल लेने का हुनर भी है यहां पर। मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद सहित स्पेन, जर्मनी, ताइवान, कैलिफोर्निया, मास्को आदि जगहों पर आपकी कृतियां प्रर्दशित हुई तथा ललित कला अकादमी, मानव संसाधन मंत्रालय, आइफेक्स जैसे संस्थानों से आपकी कृतियां पुरस्कृत भी हुईं।

पग-पग पर बिखरे सौंदर्यछटा पर आप बहुत ही सुन्दर तरीके से अपनी बात रखती रहीं हैं पर दुर्भाग्य कि सौंदर्यमयी छटा पर अपनी बातें अपने तरीके से रखने के लिए अब आप हम सभी के बीच नहीं हैं, भविष्य में आपके और भी नये कृतियों को देख पाना अब महज सपना रह गया है। 8 सितंबर 2021 यही वो भयावह समय रहा जब भारतीय कला क्षेत्र के एक बहुत ही होनहार, प्रतिभाशाली कलाकार रिनी धूमल जी कला के इस यात्रा को त्याग कर दूसरे लोक के अनंत यात्रा पर निकल गई।

चार कविता?

राजकुमार कुम्भज

1.मुँह चिढ़ाती हुई धूप

क्या खूब चेहरा है ऑधियों का
माफ़ी भी मॉग लें तो कहला, विनम्र
लेकिन वे टहनियॉ जां तो जा, कहॉ
जो अक़्सर ही टूट जाती हैं टकराते हुए
छूट जाता है सभी कुछ छूट जाता है पीछे
और एक दिन भस्म हो जाता है सभी कुछ
उड़ती रह जाती है सिर्फ़ राख, मिट्टी,धूल
और मुँह चिढ़ाती हुई धूप।

2.कितना कमतर हूँ मैं

कटिबद्ध हूँ,प्रतिबद्ध हूँ मैं
अपने ही दुःख की ओर लौटने के लिए
दुःख और-और,औरों के सभी भूलते हुए
कौन लिखेगा,कौन समझाएगा मुझे
कितना कायर,कितना कमतर हूँ मैं
फिर भी लिपिबद्ध हूँ मैं?

3.सिर्फ़ आभास और स्मरण

याचना में बदल जाती हैं प्रार्थना
कायरता में बदल जाती हैं विनम्रता
नक्क़ारख़ानों में क़ैद हो जाती हैं लालटेनें
एक दिन जँगल निगल ही लेता है हर गूँज
रह जाता है क्षणभर के लिए रह जाता है
समूचे दृश्य-पटल पर झिलझिल- झिलझिल
सिर्फ़ आभास और स्मरण।

4.मुश्किल हैं कविता

मुश्किल हैं कविता
मुश्किल कविताओं का मुश्किल वक्त है ये
मुश्किल में प्राण हैं,मुश्किल में प्रतिरोध
अन्न-कण दबे हैं अर्से से गरुण के मुँह में
भूखे हैं घरों में चिड़िया के बच्चे।

लघुकथा

पारुल अग्रवाल मित्तल

जमा पूंजी

राधिका के विवाह को एक वर्ष होने आया था। ससुराल में उसका पति विवेक और ससुर मोहन जी ही थे। सब कुछ बहुत अच्छा था। विवेक की अच्छी खासी नौकरी थी।सुख सुविधा भरा उसका ससुराल उसे ईश्वर का आशीर्वाद लगता था। बस विवेक की एक आदत उसे समझ नहीं आती थी।

पापा ज़रा दो सौ रुपये तो दीजिए, बाल बड़े हो गए है सलून जाना है..... पापा पांच सौ रुपये तो दीजिए... गाड़ी में पेट्रोल डलवाना है, पापा पचास रूपये दीजिएगा... मंदिर जाना है मेरे पास खुल्ले नहीं.... पापा मुझे और राधिका को कपडे लाने है कुछ पैसे दीजिये..... अक्सर विवेक पापा से किसी ना किसी बहाने से दो सौ, चार सौ रूपये ले लेता.... और मोहन जी मुस्करा कर दे देते।

राधिका को समझ ना आता कि विवेक पापा से पैसे क्यों मांगता है.... शुरू में तो उसे लगता कि उसके पास खुल्ले पैसे नहीं होंगे इसीलिए वो पापा से मांगता होगा... लेकिन ये तो महीने में दो चार बार हो ही जाता.... राधिका को विवेक का ये व्यवहार अटपटा लगता।

विवेक.... एक बात पूछूं... राधिका ने तकिये का कवर बदलते हुए पूछा।

हाँ... पूछो, ऐसा भी क्या पूछना है....

विवेक तुम अक्सर पापा से थोड़े थोड़े पैसे मांगते हो क्यों? पापा कि हर जरुरत का ध्यान तुम रखते हो। सब कुछ बेहतरीन करते हो..... और तुम खुद इतना कमाते हो... तो उनसे क्यों मांगते हो पैसे?

अच्छा तो ये बात हमारी मेम साहब को परेशान कर रही है.... विवेक ने मुस्कुराते हुए कहा।

मज़ाक से हटके.... बताओ ना विवेक.... क्यों करते हो तुम ऐसा...?

देखो राधिका बात बहुत छोटी लेकिन अर्थ बड़ा है, माँ के जाने के बाद पापा नौकरी पर जाया करते थे। पापा ने मेरी हर जरुरत को पूरा किया। दो साल पहले मेरी नौकरी लगी और उधर पापा रिटायर हो गए। तुम्हारे आने से उनकी जिम्मेदारी और भी कम हो गई.... उनकी पेंशन आती है लेकिन वो खर्च कहाँ करें। पापा को सदा ये एहसास रहे कि मै उनका वही छोटा विवेक हूं बस इसीलिए उनसे पैसे मांगता रहता हूं.... जानती हो पापा समझते भी है... लेकिन जब भी मैं उनसे पैसे मांगता हूं वो खुश हो जाते है.... उनकी वो मुस्कान, मानो कहती हो.... मेरे बेटे को आज भी मेरी ज़रूरत है.. उनका यही एहसास मेरे दिल का सुकून है। मै पापा की ज़रूरत ही नहीं पूरी करना चाहता बल्कि उन्हें अपनी ज़रूरत बनाना चाहता हूं.... पापा से दो सौ रूपये लेकर उन्हें उन रुपए का हिसाब देने में आज भी सुकून महसूस होता है। मै अपने पिता की पूंजी हूं राधिका और मेरे पिता मेरे जीवन की जमा.... वो हमारी जरूरत और हमारे लिए जरुरी है बस यही एहसास उन्हें जिंदगी भर करवाना चाहता हूं....

तो फिर तो कल मेरा जन्मदिन है, पापा से पूछती हूं कहाँ घुमा कर ला रहे है वो मुझे.... राधिका ने मुस्कुराते हुए विवेक के हृदय से लगते हुए कहा।

और मुझसे क्या गिफ्ट चाहिए.... विवेक ने राधिका को अंक में भरते हुए पूछा। मुझे बहुत काम है.... राधिका ने अपना हाथ छुड़ाकर कमरे से जाते हुए कहा।

राधिका ने अपने मंदिर में एक दीप प्रज्वालित किया और ससुर जी के कमरे की ओर मुड़ गई.... उसे समझ आ गया था कि अब उसे क्या करना है।

लघुकथा

स्वाति 'सखी' जोशी

निर्णय

सचिन, मैं कल से आधा घंटा देरी से घर आऊंगी। श्यामली ने आते ही घोषणा की।

क्यों? क्या तुम्हारे आफिस का टाईम बढ़ गया है? सचिन ने तुरंत पूछा।

नहीं सचिन , मैं अब रोज घर आने से पहले मम्मीजी से मिलने जाया करूंगी। क्या? मेरी मम्मी बगल वाले फ्लैट में ही तो रहती है। जब चाहे वह हमें बेल बजाकर बुला सकती है। हमारा फ्लैट छोटा पड़ेगा और बच्चों की , हमारी और मम्मी - पापा की स्वतंत्रता के लिये ही तो हमने अगल - बगल के फ्लैट्स लिये थे ना। अब अचानक क्या हो गया? सचिन कुछ समझ नहीं पाया। वह तब की बात थी, अब जब पापा नहीं रहे, तो मम्मीजी दिन भर अकेली रहती हैं। वे राह देखती हैं कि कभी तुम, मैं या बच्चे जा कर उनसे थोड़ा बतियाऐं। श्यामाबाई से वे कह रही थीं कि पहाड़ सा दिन काटे नहीं कटता है। लेकिन मैं तो मम्मी को सारा जरूरत का सामान और दवाई वगैरह ला कर देता हूँ। सचिन ने अपने पक्ष में सफाई दी।इतना काफी नहीं है सचिन! और तो और,बच्चों के साथ भी मैं कुछ खास व्यंजन भेजती हूं तो वे तो तुरंत वहाँ से भाग आते हैं।

मम्मीजी टीवी देखकर और किताबें पढ़कर भी उकता जाती हैं। फिर किसी को फोन करें भी तो आजकल किसी के पास समय कहाँ है बतियाने का? फिर छः महीने में हमारे विशाल की भी तो शादी है। नई बहू के सामने उदाहरण भी तो रखना होगा। यही सब सोचकर मैंने निर्णय लिया है। श्यामली ने एक ही सांस में मन की बात बोल दी। तुम्हारा निर्णय सर आंखों पर! कहकर सचिन ने संतुष्टि की सांस ली।

नहीं चाहिए ऐसे पोती पोते

लघुकथा
कुसुम जैन

भागवत कथा चल रही थी। बाबा जी पूरे जोश में प्रवचन दे रहे थे। हिन्दुओं जागो! हिन्दुओं की आबादी कम हो रही है। पहले कहा जाता था कि बच्चे ही हमारी वास्तविक संपत्ति है। अब पूछो तो कहते हैं कि आलीशान मकान, बैंक बेलेंस, फार्म हाउस, लम्बा चौड़ा व्यापार ही हमारी संपत्ति है। युवा तीन से दो, दो से एक और अब एक भी बच्चा नहीं चाहते है। बताओ भाइयों- बहनों! देश की रक्षा कौन करेगा? खेतों में काम कौन करेगा? व्यापार- उद्योग कौन सम्हालेगा?बुढ़ापे में तुम्हारीं सेवा कौन करेगा? परिवार में ताऊ, चाचा मामा, भुआ, मासी , बहन -भाई के रिश्ते क्या भूला दिए जाएगें? आप कैसी पीढ़ी चाहते है? सनातन धर्म की रक्षा कैसे होगी? प्रवचन समाप्त हुए। अपार भीड़ के साथ भंडारा शुरू हुआ। हम ननंद- भौजाई घर आ गए। घर आने पर मैंने अपनी भाभी से कहा-प्रवचन जोरदार था। महाराज जी सच कह रहे थे। भाभी बोली- क्या खाक सच कह रहे थे? पानी की अभी से मारा मारी , हवा जहरीली , सिंथेटिक दूध, मिलावटी घी, तेल, पेस्टीसाइड अन्न, कार्बन से युक्त फल- सब्जियां , क्या क्या गिनाऊँ? युवा क्या गंभीर बीमारियों से जुझती अस्वस्थ पीढ़ी को जन्म दे?

ना जीजी ना। मुझे ऐसे पोते पोती नहीं चाहिए।

जिंदा है हरसूद: भावनाओं और तथ्यों की गूंथन

पुस्तक समीक्षा

मीनाक्षी दुबे
समीक्षक

कोई भी गाँव / शहर या कस्बा मात्र गाँव / शहर या कस्बा नहीं होता। उसकी अपनी तासीर होती है। वहाँ का इतिहास, वहाँ का भूगोल, वहाँ की संस्कृति, वहाँ के पर्व- त्यौहार, वहाँ के रहवासी.... सभी मिलकर इसकी तासीर बनाते हैं । अपनत्व व भाईचारे की तासीर वाला एक कस्बा था हरसूद.. एक आम कस्बे की तरह ही यहाँ का जीवन चलता था। मध्यप्रदेश का यह कस्बा इंदिरा- सागर बांध परियोजना के डूब क्षेत्र में आया। यूँ तो जून महीने की तीस तारीख़ हर बरस आती है पर 30 जून 2004 वह तारीख़ थी, जब सरकारी आदेशों के फलस्वरुप पूरा हरसूद कस्बा खाली करवा लिया गया था। जो धीरे-धीरे इंदिरा सागर बाँध के बैक वाटर में समा गया। जिंदा है हरसूद कवि अशोकचंद्र दुबे अशोक के काव्यसंग्रह शीर्षक ही संग्रह की संपूर्ण भाव भूमि को स्पष्ट कर देता है। शीर्षक का कवर पेज, ध्वस्त मंदिरों की कहानी कहता है। यह चित्र हरसूद के हृदय- स्थल पर विराजित श्री राम मंदिर एवं शिव मंदिर का है।

अशोक दुबे ने इस संग्रह में हरसूद के दर्द को जिया है। मन की कसक के साथ इसमें तथ्यात्मक विश्लेषण भी हैं। हरसूद को लेकर के कई कविताएँ, किस्से, कहानियाँ रची गईं .. कोई डूबते हरसूद के पास एक-दो घंटे ठहरा, कोई एक-दो दिन.... कोई एक- दो हफ़्ते. और किसी किसी ने तो दूर बैठे- बैठे ही डूब के इस दर्द को आँकने की कोशिश की। काल्पनिक किस्से- कहानियों में कोई दर्द आख़िर किस हद तक उतारा जा सकता है। इन सब के विपरीत यह संग्रह, भोगे गए यथार्थ को निकटता से दर्ज़ करता है। यह हरसूद की यादे, दर्द और विस्थापन की सच्ची कहानी कहता है। इनके दोहों में एक जीवंत एहसास है हरसूद का।

शुरुआत होती है एक चिट्ठी से-

हरसूद का लोग नह्या खह्य
एक चिट्ठी

इस चिट्ठी में ओ काका के संबोधन से कहा गया है-

हूतो हऊँ श्रीकृष्ण तो,
हथलई लगई देतो।
दुःख को पहाड़ यो अद्धर
उठई लेतो।।

इन पंक्तियों में विवशता है, डूब के सरकारी निर्णय का विरोध न कर पाने की। जिस तरह श्री कृष्ण बनना असंभव है, उसी तरह किसी सरकारी निर्णय को बदलना भी संभव नहीं। हालांकि इस डूब को लेकर बाबा आमटे, अरुंधति रॉय, मेधा पाटेकर आदि सामाजिक सरोकारों से जुड़े लोगों ने विरोध स्वरूप आंदोलन किए थे लेकिन निर्णय को बदलना संभव नहीं हो पाया। अशोक चन्द्र दुबे जी ने इस संग्रह में दोहों के

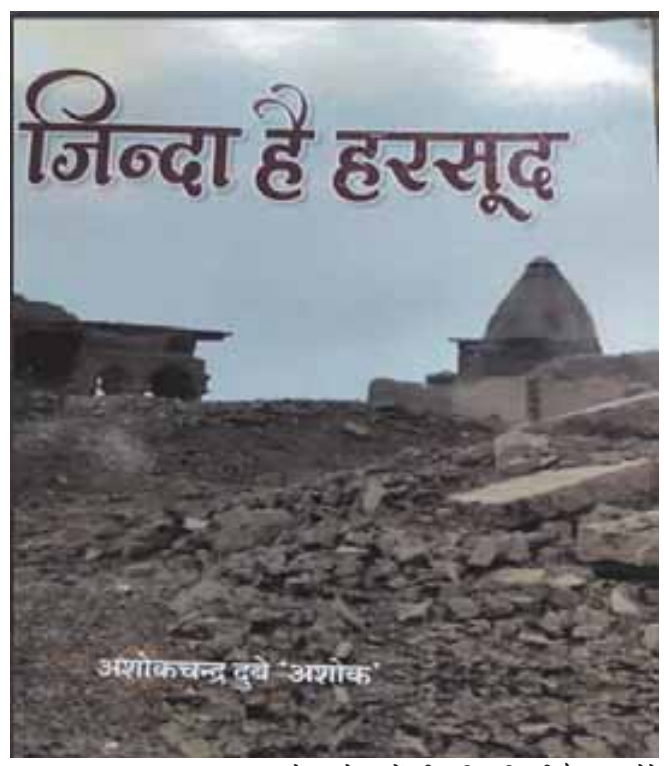

माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी है। कुछ दोहे जो अलग- अलग दृश्य बुनते हैं- जग जाहिर हरसूद के, सुखद निमाड़ी बोल। मोहर्रम ग्यारस मनें, सजें ताजिए, डोल।।

दीप वही जो कर सके, कुटिया धवल प्रकाश।
पतझड़ में ही अनल-वत, खिलता सदा पलाश।।
संझा, नरवत, गोरधन, गोबर के आकार।
दुनिया में ऐसा कहाँ, पर्यावरणी प्यार।।

इस परियोजना में केवल हरसूद ही नहीं डूबा था हरसूद के आसपास के छोटे- बड़े लगभग अस्सी गाँव भी इस डूब में शामिल थे। इन नामों को भी दोहों का स्वरूप दिया गया है-

पिपलानी, परती पुरा, गोरावां, गन्नौर। इमलानी, बल्यापुरा, बरमलाय, बिजौर।।

पामाखेड़ी, गड़बड़ी, झागरिया, मालूद। चैनपुरा बेचैन था, निर्गुनिया मौरूद।।

ढेर सारे भावुक पलों को समेटने के बाद अंत एक सकारात्मक विचार से होता है।

दूर नहीं वह समय अब, दुख यह बने कपूर।
उपजेंगे इस बाँध से, सुख साधन भरपूर।।

वे दिन तपते जेठ थे, था कष्टों का ताप। सावन है बस निकट ही, हरित खिलेगी आप।।

किसी स्थान विशेष के बारे में बात करते समय, बात इस तरह से की जानी चाहिए कि उस स्थान का इतिहास, वहाँ का गौरव और लोक- संस्कृति प्रभावित न हो.... । लेखकीय दृष्टिकोण का फायदा उठाकर तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत न किया जाए.. ज्यों का त्यों रखा जाए.. और इस मामले में अशोक दुबे जी पूरी तरह खरे उतरते हैं। वे भावनाओं के साथ-साथ तथ्यों को भी उनके वास्तविक स्वरूप में बखूबी सामने लाते हैं। संग्रह में भाव तो हैं पर भावों का अतिरेक नहीं है। यह हरसूद के डूब की करुण गाथा न होकर एक परिचय पुस्तिका है। आज बाईस बरस बाद भी इसे पढ़ते हुए पुराने हरसूद की यादें ताज़ा होती रहीं। मेरे लिए इसे पढ़ना महज़ पढ़ना नहीं रहा बल्कि एक यात्रा की तरह रहा। इस यात्रा में मैंने अपने बचपन व किशोर वय तथा बाद के बरसों की मिठास को गहराई से जिया, हरसूद के लोक की गंध से खुद को सराबोर पाया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सामयिक

श्रीति राशिनकर

लेखक मेडिकल कॉलेज रतलाम में शिक्षक हैं।

कारी बदरिया छाई, मन भावन ऋतु आई !

नदियां ,तालाब ,सागर जल से तरबतर हो जाते है और मनुष्य संतोष से भीग जाता है। ऊंचे ऊंचे पर्वत आसमान से गिरती बड़ी बड़ी बूंदों को कुछ इस तरह एकत्रित करते है मानो आपस में स्पर्धा कर रहे हो। वहीं काले काले घुमक्कड़ बादल हवा की दिशा के साथ अठखेली करते है। ये मनमौजी बादल कब बरसेंगे इसका अंदाज साधारण मनुष्य नहीं कर सकता , तभी तो कहते है जो गरजते है वे बरसते नहीं है लेकिन यह भी सच है कि ये बादल जब बरसते है तो उनकी छटा न्यारी होती है। धीरे धीरे विशाल पर्वतो के शिखर से जल प्रपात बहने लगते है। इस अप्रतिम दृश्य को देखने के लिए लंबे समय की प्रतिक्षा करनी होती है। प्रतिक्षा वह शब्द है जो मन को उत्साहित करता है। सुखद भविष्य के प्रति आशान्वित करता है...इसीलिए बादलों की प्रतीक्षा सुखद होती है।

आ समान पर यत्र तत्र बादल बिखरे है और गर्मी की भीषण तपन के बाद जन मानस की आँखे पावस की बूंदों की अगवानी के लिए तैयार है , मानो कोई अतिथि घर आने वाला हो। पलक पांवड़े बिछाये हुए हम सब बेसब्री से प्रतीक्षा करते है पावस बूंदों की।कभी खूब मान मनौती करते करते जब बादल पृथ्वी पर मेहरबान हो जाते है और गरज गरज कर बरसते हैं तब तप्त वसुधा तृप्त हो जाती है।यह तृप्ति का भाव न सिर्फ काली मिट्टी की सुगंध से मिलता है वरन पृथ्वी का हर जीव जो अब तक ऊष्मा से त्रस्त था शीतल जल से आह्लादित हो उठता है। नदियां ,तालाब ,सागर जल से तरबतर हो जाते है और मनुष्य संतोष से भीग जाता है। ऊंचे ऊंचे पर्वत आसमान से गिरती बड़ी बड़ी बूंदों को कुछ इस तरह एकत्रित करते है मानो आपस में स्पर्धा कर रहे हो। वहीं काले काले घुमक्कड़ बादल हवा की दिशा के साथ अठखेली करते है। ये मनमौजी बादल कब बरसेंगे इसका अंदाज साधारण मनुष्य नहीं कर सकता , तभी तो कहते है जो गरजते है वे बरसते नहीं है लेकिन यह भी सच है कि ये बादल जब बरसते है तो उनकी छटा न्यारी होती है। धीरे धीरे विशाल पर्वतो के शिखर से जल प्रपात बहने लगते है। इस अप्रतिम दृश्य को देखने के लिए लंबे समय की प्रतिक्षा करनी होती है। प्रतिक्षा वह शब्द है जो मन को उत्साहित करता है। सुखद भविष्य के प्रति आशान्वित करता है...इसीलिए बादलों की प्रतीक्षा सुखद होती है। बरसते बादल कही असीमित जल धारा पृथ्वी पर पर बरसाकर जल स्रोतों में इकट्ठा होती है और सूरज की ऊष्मा से वाष्पीकृत जल पुनः बादलों का रूप धारण करते हैं ! कितनी अनूठी माया है ..यह , गिरना , उठना और फिर बरसना। यही बादल हवा के रुख के साथ चल पड़ते है बरसने,और हां उम्मीद जगाने उस किसान की जिसने परिश्रम से बीजों को इसी आस में बोया था कि इन बादलों से अमृत - धारा बरसेगी व बीज अंकुरित होंगे। उम्मीद उस इंसान की जिसने वैशाख की चिलचिलाती धूप में अपना पसीना बहाया होता है। आस पूरे जन- मानस की जो घंटों कतार में लगकर प्रतिदिन पीने के पानी की प्रतीक्षा करता है और न मिलने पर अपनी बेबसी पर रोता है । पानी का महत्व प्यासा ही जान सकता है, जिसने कई कई मीलों चलकर पानी लाया है। साहित्य में बादलों को कई उपमाएं दी गईं है , कभी तो ये चंचल , शोख बादल हवा के साथ पकड़मपाटी खेलते हैं , तो कभी महाकवि कालिदास रचित मेघदूतम में यक्ष द्वारा प्रेमिका को संदेश भेजने के लिए संदेशवाहक का काम करते है। कभी-कभी ये बादल धरती के इतने नजदीक आ जाते हैं कि उन्हें स्पर्श करने के लिए मन बेताब हो उठता है । बादलों की चित्रकारी से भला कौन अनजान है ! जैसे ही वर्षा ऋतु आती है इन बादलों का जमघट आकाश पर इस तरह सजता है मानो किसी चित्रकार ने उन्हें अपनी तूलिका से सजा कर आसमान के कैनवास पर टांक दिया हो । फिर संगीत की स्वर-लहरियों से किसी गायक के सुरीले कंठ से जब ÷मेघ-मल्हार÷ राग फूटता है तो सारे बादल इकट्ठा होकर बरस पड़ते है पृथ्वी पर ,धरा को शीतल करने , गर्मी से शुष्क हुई जमीन को तरो ताजा करने के लिए ! कितनी खूबसूरत होती है ये मोती जैसी पावस बूंदें , मेघों की थिरकन और बारिश की बूंदों की सरगम की ये जुगलबंदी मन को आनंदित करती है। मिट्टी की सौंधी खुशबू से वातावरण महक जाता है। कितने भी इत्र ,महंगे परफ्यूम इस सुगंध की जगह नही ले सकते हैं। सम्पूर्ण वसुधा जो अब तक वर्षा के स्वागत हेतु बाट जोह रही थी, बूंदों की लय से झूम उठी ! धीरे धीरे बीजों ने नमी सोखकर अंकुरण प्रारंभ किया । पौधें लहलहाने लगे और देखते ही देखते हरियाली छा गयी। सृष्टि ने हरी चदरिया ओढ़ ली। नव श्रृंगार से पृथ्वी की सुंदरता पर चार चांद लग गए। पानी के लिए तरसते लोगों में आस जागी लेकिन वे जानते हैं कि फिर से पानी की कमी अगले वर्ष महसूस होगी , हम में से ही अनेक इसके महत्व को न समझते हुए व्यर्थ ही इसकी बर्बादी करते हैं । हमें सहेजना होगा इन बूंदों को जिससे पीने लायक पानी हमेशा उपलब्ध हो सकेगा। ऐसी हरीतिमा जो मनुष्य के जीवन के लिए , उसके पोषण के लिए जरूरी है बारिश से समृद्ध होती है। पृथ्वी के अलंकार हैं ये हरे-भरे खेत ,कलकल बहते जल-स्रोत और विशाल हरियाते पर्वत , जो वर्षा से ही सम्भव है। इस धरा को सुंदर बनाने के लिए मनुष्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है । इस धरा को बचाना हम सब की जिम्मेदारी है।अन्यथा यह धरा नहीं बचेगी ना बचेगा जीवन ।

जागो प्यारे... जीवन पाठ की अद्भुत कविता

काव्य

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

अ योध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की एक कविता है- जागो प्यारे जिसकी शुरुआत होती है- 'उठो लाल अब आंखें खोलों' से जो आधुनिकता की , चेतना की और जागरण की संगति को अपने भीतर इस तरह से धारण किए हुए है कि आप केवल एक बाल कविता भर नहीं पढ़ते यह कविता हर समय आपको नये सिरे से सोचने पर बाध्य करती है। यह कविता संदेश, समझाने के क्रम में जीवन की महीन बुनावट करते हुए बाल मन पर न केवल गहरा प्रभाव छोड़ती है बल्कि हर आदमी को यह कविता अपनी उपस्थिति से एक नये सिरे पर जोड़ने का काम करती है। कह सकते हैं कि यह बाल कविता के रूप में एक अमर क्लासिक बाल कविता है जो जीवन को बहुत गहरे से प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

बाल कविता की गहराई , जीवन बोध, संवेदनशील मन और नित्य परिवर्तन की संभावना को अपने भीतर समेटे हुए यह कविता जीवन जीने की बड़ी प्रस्तावना को भी लिखने का काम करती है। इस कविता में एक मां अपने लाल से कहती है कि अब आंखें खोलों पानी लायीं हूं, पानी से मुंह धो लो अब नया सवेरा हो चुका है चारों तरफ लाली छायी है, अब सोने का समय नहीं है, चिड़िया चहक रही है। धरती नये सिरे से रंग गई है तुम अब भी सोये हो तो जाग जाओ। मां के द्वारा अपनी संततियों के प्रति यह एक तरह से जागरण गीत है। सृष्टि मात्र में जब जागरण की लीला चल रही है तो भला ऐसे में कोई कैसे सो सकता है। हे मेरे लाल उठो जागो और दुनिया को देखो समझों... सौंदर्य को , प्रकृति की लीला को और एक नये संसार को देखों जो आंखों के आगे खुला है। यह समय स्वर्णिम आभा से पूरित संसार देखने का इस आधार पर चलने का और चेतना के तारों को जगाने वाली कविता है। इसे केवल बाल कविता या बच्चों की कविता भर कहे जाने की जरूरत नहीं है बल्कि इससे बहुत आगे यह कविता संसार को प्रबोधित करने वाली कविता है कि कैसे हमारा देश जागरण का स्वागत करता है? कैसे भविष्य की संरचना को तैयार करता है और किस तरह से शिक्षा का पाठ सूर्योदय के साथ प्रकृति की लीला के बीच

अपने नित नए संकल्पों को पूरा करने का है। यदि इस समय भी तुम यानि कि पूरा भविष्य सोया रहा गया तो फिर हम क्या कुछ सौंप पायेंगे धरती को। यह समय जागरण का है, चेतना के जागरण का भी समय है इसे यूं ही खोकर मत गवाओं। इस तरह से एक नई गूंज और सृष्टि के क्रम में जागरण की जो चेतना है उसका संदेश इस छोटी सी बाल कविता में दिया गया है। आधुनिक हिंदी कविता और खड़ी बोली हिन्दी के शुरुआती प्रयोगकर्ता अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की यह कविता शुरू हो जाता है। यह शिक्षा किसी स्कूल कालेज में नहीं घर से, घर के आंगन से और मां के द्वारा मिलती है। भारतीय माताओं का यह जागरण गीत एक तरह से कवि के जागरण गीत का पर्याय बन गया है। यह आधुनिक चेतना का , भारतीयता का और नई गूंज की कविता का एक विहंगम उदाहरण है। जिसमें हमारे लिए पूरा दृश्य विधान भी कवि बुनते हुए चलता है, एक एक गति एक एक लीला पर संवाद करते हुए जीवन पाठ की यह अद्भुत कविता है।

कहानी

सुधीर कुमार सोनी

मातादीन

मातादीन संगीत महाविद्यालय में कार्य करने सीधे नहीं आए थे ।वहाँ के कर्ता-धर्ता उन्हें कचहरी से अपने संस्थान ले आए थे ।अंग्रेज सरकार के कार्यालय में वे अधिकारी के यहाँ पंखा खींचने का कार्य करते थे । पंखे की रस्सी खींचते रहते थे ।जैसे गर्मी के दिनों में सरकारी कार्यालय में खस में पानी डालने के लिए दैनिक रोजी पर कर्मचारियों को रखा जाता था ।

मा तादीन के भारी और गठीले शरीर की संगीत के सात सुरों से गहरी मित्रता थी।जब कभी मातादीन का मन होता वे अपने बांस से निर्मित वाद्य यंत्र में उन्हें आमंत्रित करते और मातादीन सुरों में और सुर मातादीन में घुल- मिल जाते थे। मातादीन चार फुट और दस इंच ऊँचा और लगभग गहरा सांवला रंग का था। वह सिर्फ चलता था, किसी ने कभी भी शायद ही उसे दौड़ता देखा होगा। मातादीन हप्ते में दो दिन या तीन दिन घर के सामने से निकलता और मेरे चाचा से राम-राम हो ही जाती। जब भी वह निकलता चाचा कहते अव मातादीन का हाल चाल हवय उसका रटा-रटाया सा एक ही जवाब होता सब बढ़िया है मालिक बड़ी विनम्रता होती उसके जवाब में ।

पिताजी जब श्रीसुरसंगम संगीत महाविद्यालय के विद्यार्थी थे तब वे बारह वर्ष के रहे होंगे और मातादीन किशोर अवस्था की देहरी पर थे।यह बात 1945 के आसपास की है।फिर जब चाचा 1952 में विद्यार्थी के रूप में भर्ती हुए तब भी मातादीन था।जब 1970 में मेरी बड़ी बहन ने विद्यार्थी के रूप में प्रवेश ली तब मातादीन वृद्ध हो चुके थे लेकिन अपने कार्य मे सक्रिय थे।

मातादीन संगीत महाविद्यालय में कार्य करने सीधे नहीं आए थे।वहाँ के कर्ता-धर्ता उन्हें कचहरी से अपने संस्थान ले आए थे।अंग्रेज सरकार के कार्यालय में वे अधिकारी के यहाँ पंखा खींचने का कार्य करते थे।पंखे की रस्सी खींचते रहते थे।जैसे गर्मी के दिनों में सरकारी कार्यालय में खस में पानी डालने के लिए दैनिक रोजी पर कर्मचारियों को रखा जाता था।

संगीत महाविद्यालय में मातादीन वैसे तो कुछ खास नहीं मामूली सा कर्मचारी था फिर भी वह बहुत कुछ था ।वह जब गुस्से में होते तो किसी पद का कोई भी कर्मचारी हो उसे तो डाँट देते, कोई उनके कहे का बुरा नहीं मानते था।

उम्र के साथ साथ मातादीन की बुद्धि में भी धूमिल होने लगी थी।बहुत कुछ वह भूलने लगा था।यह कमी संस्थान को भी नजर आने लगी थी कि वह भूलने लगा है और उसके साथ साथ दलिद्दर भी हो गया है। जिस कमरे में वह रहता है,उसकी साफ सफाई ढंग से नहीं करता और अपने शरीर की भी सफाई उससे पहले की तरह नहीं हो पा रही थी।

मातादीन के विषय में बात तो साफ थी कि भले बाहर के लोगों को लगता रहा होगा कि अब वह किसी काम का नहीं रह गया है लेकिन उड़ने संस्थान की बहुत सेवा की है वह भी लम्बे समय तक, तो बाकी चीजें गौण हो जाती हैं। संस्थान के संस्थापक भी चल बसे थे जिन्होंने मातादीन को यहाँ लाया था।

मातादीन छत्तीसगढ़ का वाद्ययंत्र बाँस बहुत ही लयात्मक और सुरीला बजाता था।अपने मूड में रहता तो वह बजाता हुआ निकल पड़ता और एक चक्कर लगाकर आ जाता। आसपास के लोग भी जानते थे कि मातादीन वहाँ का कर्मचारी है।

अपने अंतिम कुछ दिनों के कुछ दिन पहले वह संस्थान के जिस कमरे में रहता था वहाँ से निकलना बंद कर दिया था। बीच बीच में वह कई दिनों तक नहाता भी नहीं था।एक दिन अपने कमरे में वह जमीन पर निर्जीव पड़ा मिला। पास ही उसका वाद्ययंत्र भी मिला,जिसको बजाने कीं अब कोई हिम्मत भी नहीं कर सकता था।

मातादीन की मृत शरीर के साथ मानो संगीत विद्यालय के दीवारों भी मानो मृत देह की मानिंद हो गई थी। मातादीन की देह से धीरे धीरे प्राण निकले तो उसके वाद्य यंत्र भी मानो मृत हो गया था। उसकी देह के सुर का सुध लेने की किसी को भी फुर्सत नहीं थी। मातादीन की आत्मा ने तो देह त्याग दिया था लेकिन सुरों को उसके देह को त्यागने में बहुत समय लगा होगा।आज उसकी देह से सुर हवा में विलीन होकर भी बैचेन हो रही होगी।

मातादीन उस दिन सचमुच चला गया ।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।)

गवर्नर- द साइलेंट सेवियर- वित्तीय घटनाचक्र के रोमांच की कथा

यह फिल्म 1990 के उस भीषण भारतीय आर्थिक संकट पर आधारित है, जब देश का विदेशी मुद्रा भण्डार लगभग खत्म हो गया था और भारत दिवालिया होने की कगार पर था । कहानी दिखाती है कि कैसे अस्थिर राजनीतिक माहौल के बीच एक प्रशासनिक सर्वोच्च अधिकारी यानी गवर्नर देश को इस संकट से उबारने के लिए कड़े और जोखिम भरे फैसले लेता है । अर्थशास्त्र जैसे जटिल और गंभीर विषय को मनोरंजक ढंग से पेश करने के लिए लगभग सभी समीक्षकों ने इसे काफी सराहा है । हालांकि कुछ समीक्षकों का मानना है कि कहानी की पटकथा थोड़ी कमजोर है और यह पूरी तरह से एक व्यक्ति (गवर्नर) की जीत पर केंद्रित है ।

कि सी भी सामाजिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक उथल-पुथल जिससे देश की संप्रभुता , स्वतंत्रता और स्वायत्तता प्रभावित होती है उस स्थिति पर फिल्म बनाना आसान काम नहीं है मगर फिर भी इसी माह बारह जून को प्रदर्शित फिल्म - गवर्नर द साइलेंट सेवियर को एक ऐसा ही जोखिम भरा प्रयास माना जा रहा है । यह एक राजनीतिक और वित्तीय रोमांचक घटनाक्रम पर बनाई गई फिल्म है। यह फिल्म 1990 के उस भीषण भारतीय आर्थिक संकट पर आधारित है, जब देश का विदेशी मुद्रा भण्डार लगभग खत्म हो गया था और भारत दिवालिया होने की कगार पर था। कहानी दिखाती है कि कैसे अस्थिर राजनीतिक माहौल के बीच एक प्रशासनिक सर्वोच्च अधिकारी यानी गवर्नर देश को इस संकट से उबारने के लिए कड़े और जोखिम भरे फैसले लेता है। अर्थशास्त्र जैसे जटिल और गंभीर विषय को मनोरंजक ढंग से पेश करने के लिए लगभग सभी समीक्षकों ने इसे काफी सराहा है। हालांकि कुछ समीक्षकों का मानना है कि कहानी की पटकथा थोड़ी कमजोर है और यह पूरी तरह से एक व्यक्ति (गवर्नर) की जीत पर केंद्रित है ।

फिल्म की शुरुआत वर्ष 2022 में श्रीलंका में आर्थिक संकट के हालात को टीवी पर दिखाये जाने से होती है। वहाँ जनता आराजक हो चुकी है। इसी परिप्रेक्ष्य में अदिति वर्मा (अदा शर्मा) अपने भतीजे को बताती है कि वर्ष 1990 में भारत भी ऐसे ही दिवालिया होने की कगार पर पहुँच चुका था। इराक के कुवैत पर हमले के बाद कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आता है। मँहगाई, बेरोजगारी से जनता जूझ रही थी। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री की सिफारिश पर ए रमनन (मनोज बाजपेयी) को रिज़र्व बैंक आफ इंडिया (आरबीआइ) का गवर्नर नियुक्त किया जाता है और यही से शुरु होता है नये गवर्नर का कड़े वित्तीय अनुशासन का दौर ।

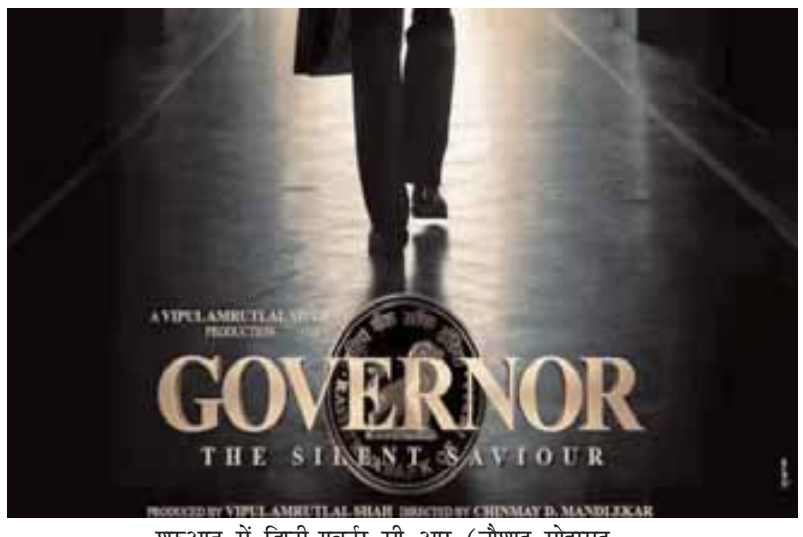

नये गवर्नर राजनीतिक दबाव, नौकरशाही के प्रतिरोध और जनता की बढ़ती चिन्ताओं के बीच रास्ता निकालने की कोशिश करते हैं। परिवार में उनकी पत्नी वंदिता (मधु) और आइएएस की तैयारी कर रही उनकी बेटी है। शुरुआत में डिप्टी-गवर्नर सी आर (नौशाद मोहम्मद कुंजू) उनकी नियुक्ति से खुश नहीं होते हैं। इधर बड़ी खबर की तलाश में रहने वाली अदिति लगातार रमनन की किसी गलती या चूक को पकड़ने की कोशिश में रहती है। आखिरकार मौजूदा सरकार के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक के साथ मिलकर देश का सोना विदेश भेजा जाता है ताकि अत्यंत आवश्यक विदेशी मुद्रा जुटाई जा सके। इन कदमों से भारत अपनी तत्काल वित्तीय जिम्मेदारियां पूरी कर सका।अंत में फिल्म नई सरकार के आगमन और नये वित्तमंत्री के नेतृत्व में शुरू हुए आर्थिक उदारीकरण कार्यक्रम का भी उल्लेख करती है, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को मूल रूप से बदल दिया।

अभिनेता मनोज बाजपेयी इस फिल्म में गवर्नर की केन्द्रीय भूमिका में हैंऔर फिल्म का पूरा भार उनके ही कंधों पर है। गंभीरता और परिपक्वता वाले चरित्र मनोज से बेहतर निभा भी कौन सकता है ? गवर्नर रमनन के रुप में वे जब किसी मुश्किल में पड़ते हैं और उससे निकलने के लिये जद्दोजहद करते हैं तो वे अपने अभिनय से दर्शकों को इतना जोड़ लेते हैं कि दर्शक भी उनके साथ समस्या का समाधान ढूंढने की कोशिश करने लगते हैं।अभिनेत्री मधु शर्मा ने फिल्म में रमनन की पत्नी वंदिता की भूमिका निभाई है ,उन्हें पर्दे पर देखकर आपको खुशी मिलेगी । वहीं अदा शर्मा ने पत्रकार अदिति वर्मा का रोल किया है, जो रमनन द्वारा निकाले हल की जानकारी जुटाने की कोशिश करती रहती हैं। वहीं नौशाद मोहम्मद कुँजू सहित बाकी कलाकारों ने भी अच्छा काम किया है ।

विपुल शाह द्वारा निर्मित यह फिल्म रमनन के प्रयासों के बारे में बात करती है। फिल्म की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह न तो सरकार का महिमामण्डन करती है न ही अपने मुख्य चरित्र को असाधारण नायक के रूप में पेश करती है। निर्देशक चिन्मय डी मच्डलेकर ने कहानी को उपदेशात्मक बनाने के बजाय यथार्थवादी रखा है, जिससे उस दौर की सामाजिक और आर्थिक त्रासदी स्वाभाविक रूप से दर्शकों के सामने उभरकर आती है।

प्रमेश सिंह राजपूत बने करणी सेना परिवार के जिला सह मीडिया प्रभारी

बैतूल। करणी सेना परिवार मध्यप्रदेश की बैतूल जिला इकाई ने संगठन को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण नियुक्ति करते हुए बैतूल निवासी प्रमेश सिंह राजपूत को जिला सह मीडिया प्रभारी पद पर मनोनीत किया है। इस संबंध में जिला अध्यक्ष विजय सिंह राजपूत द्वारा नियुक्ति आदेश जारी किया गया। जारी आदेश के अनुसार, प्रमेश सिंह राजपूत का कार्यकाल 25 जून से आगामी आदेश तक प्रभावी रहेगा। नियुक्ति पत्र में विश्वास व्यक्त किया गया है कि वे पद की गरिमा और सम्मान बनाए रखते हुए संगठन द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे तथा करणी सेना परिवार की मजबूती के लिए अपना पूर्ण योगदान देंगे। नियुक्ति आदेश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि कार्यकाल के दौरान अनुशासनहीनता अथवा किसी भी प्रकार से संगठन को नुकसान पहुंचाने की स्थिति में संबंधित पदाधिकारी को तत्काल पदमुक्त किया जा सकता है।

लूट के पांच आरोपियों को किया गिरफ्तार

बैतूल। बेलोण्ड घाट सारणी में हुई लूट (डकैती) के 5 आरोपियों को सारणी पुलिस ने किया गिरफ्तार किया है। 25 जून को फरियादी फरहान अंसारी पिता नजरूल अंसारी (26) निवासी वार्ड 19 गाँधी नगर पाथाखेडा ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि 22 जून को वह अपने दोस्त सागर नागले व प्रेम गुजरे के साथ मोटरसाईकिल से मुलताई से शादी

कर वापस आ रहे थे कि रास्ते मे बेलोण्ड घाट सारणी पर 5 अज्ञात लोग 2 मोटरसाईकिल से आये और रास्ते रोककर मारपीट कर जबरदस्ती 4800 रूपये एवं तीन मोबाईल लूट कर ले गये। रिपोर्ट पर थाना सारणी में धारा 310(2) बीएनएस का कायम कर विवेचना में लिया गया। पुलिस टीम ने प्रकरण की गहन जांच प्रारंभ की। प्रकरण की विवेचना के दौरान संकलित साक्ष्य कर थाना सारणी पुलिस ने 5 आरोपीगण रविन्द्र उर्फ भोला, अमन कवडे,आकाश सलाम,राहुल उईके,विजेन्द्र सिंग को गिरफ्तार किया। आरोपियों से 3 मोबाईल एवं घटना में प्रयुक्त दो मोटरसोईकिल एवं चाकू जप्त किया गया है। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी जयपाल इनवाती, उप निरीक्षक सुनिल गौर,सउनि अनिल मोर्य, प्रधान आरक्षक किशनलाल सेलू, आरक्षक मोहित भाटी,मोनू उईके,सुभाष मंडलोई, रविमोहन दर्शमा की सराहनीय भूमिका रही।

कॉलेज चौक पर पाइपलाइन लीकेज की युद्धस्तर पर हो रही मरम्मत

बैतूल। शहर के कॉलेज चौक पर पेयजल पाइपलाइन में हुए लीकेज को नगरपालिका द्वारा युद्ध स्तर पर मरम्मत कार्य कराया जा रहा है। नगरपालिक प्रशासन का उद्देश्य शहरवासियों को निर्बाध एवं सुचारु पेयजल आपूर्ति उपलब्ध कराना है, ताकि किसी भी नागरिक को पानी की समस्या का सामना न करना पड़े। मरम्मत कार्य तेजी से जारी है और इसे जल्द से जल्द पूरा करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

नगरपालिका परिषद बैतूल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि कॉलेज चौक पर पिछले कई दिनों से पेयजल पाइपलाइन में लीकेज की समस्या बनी हुई थी। इसे देखते हुए संबंधित अमले को तत्काल मौके पर लगाया गया और युद्ध स्तर पर मरम्मत कार्य शुरू किया गया। प्रशासन का कहना है कि पाइपलाइन की मरम्मत पूरी होने के बाद संबंधित स्थान पर सडक़ की मरम्मत का कार्य भी नगरपालिका परिषद बैतूल द्वारा कराया जाएगा, जिससे आवागमन पूरी तरह सुचारु हो सके। नगरपालिका परिषद बैतूल ने शहरवासियों को भरोसा दिलाया है कि मरम्मत कार्य शीघ्र पूरा कर पेयजल आपूर्ति को पूरी तरह सामान्य किया जाएगा। साथ ही नागरिकों से अपील की गई है कि आवश्यक कार्य पूर्ण होने तक सहयोग बनाए रखें, ताकि मरम्मत कार्य बिना किसी बाधा के समय पर पूरा किया जा सके।

10वीं की छात्रा ने खाया जहर, मौत

माता-पिता घर पर नहीं थे, मौके से मिलीं संदिग्ध पुडियां

बैतूल। गौठाना क्षेत्र में 10वीं कक्षा में पढने वाली एक 16 वर्षीय छात्रा की जहरीला पदार्थ खाने से मौत हो गई। शुक्रवार शाम करीब 7 बजे जब उसकी तबीयत अचानक बिगडने लगी, तो पड़ोसियों ने तुरंत उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया। हालांकि, अस्पताल में उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। पुलिस के अनुसार, जिस समय छात्रा ने यह कदम उठाया, उस वक्त उसके माता-पिता घर पर मौजूद नहीं थे। प्रारंभिक जांच और जानकारी के मुताबिक, घर में लंबे समय से पारिवारिक कलह चल रही थी और आए दिन विवाद होते रहते थे। पुलिस को घटनास्थल से कुछ संदिग्ध पुडियां मिली हैं, जिससे आशंका जताई जा रही है कि छात्रा ने सल्फास खाकर आत्महत्या की है। हालांकि, मौत के वास्तविक कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट और पुलिस की विस्तृत जांच के बाद ही हो सकेगा। जिला अस्पताल चौकी पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर शव का पोस्टमार्टम करा लिया है। फिलहाल पुलिस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है।

विद्यालय के 25 वर्ष पूरे होने पर टॉपर्स विद्यार्थियों को मिले लैपटॉप

उड़ान... सपनों की समारोह में श्री विनायकम स्कूल ने प्रतिभाओं को दिया सम्मान

बैतूल। श्री विनायकम स्कूल ने अपनी 25 वर्षों की गौरवशाली शैक्षणिक यात्रा पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शनिवार को विद्यालय परिसर में प्रतिभा सम्मान समारोह उड़ान... सपनों की का आयोजन किया। शिक्षा, संस्कार और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को समर्पित इस समारोह में मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान किया गया तथा विद्यालय की शैक्षणिक, खेल, सांस्कृतिक एवं नवाचार आधारित उपलब्धियों को साझा किया गया। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन, दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इसके बाद विद्यालय परिवार ने उन मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान किया जिन्होंने अपनी प्रतिभा, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन से विद्यालय तथा जिले का नाम रोशन किया। सीबीएसई कक्षा 12 गणित संकाय के छात्र नीरज नहारिया को 95 प्रतिशत अंक अर्जित करने तथा मध्यप्रदेश बोर्ड कक्षा 12 वाणिज्य संकाय के छात्र कृतिक नागले को 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से लैपटॉप भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं नर्सरी से कक्षा 12 तक के विभिन्न वर्गों में शैक्षणिक उत्कृष्टता हासिल करने वाले विद्यार्थियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह को संबोधित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य श्याम साहू ने कहा कि उड़ान... सपनों की विद्यार्थियों के सपनों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का संकल्प है। उन्होंने कहा कि विद्यालय का उद्देश्य जिम्मेदार, संस्कारित, आत्मविश्वासी और राष्ट्रनिर्माण में योगदान देने वाले नागरिक तैयार करना है। विद्यालय के डायरेक्टर संजय राठौर ने कहा कि पिछले 25 वर्षों में श्री विनायकम स्कूल ने विद्यार्थियों को शिक्षित करने के साथ उनके सपनों को दिशा देने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी विद्यालय परिवार के लिए विशेष है और उसकी सफलता पूरे संस्थान का गौरव है। आने वाले वर्षों में शिक्षा, खेल, संस्कृति, विज्ञान और व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की उत्कृष्टता स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

उत्कृष्टता की परंपरा को आगे बढ़ा रहे विद्यार्थी

विद्यालय ने बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणामों की अपनी परंपरा को भी रेखांकित किया। विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों में पलक राठौर ने 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जिला मेरिट में तृतीय स्थान हासिल किया था, जबकि रोशनी पवार ने 93.6 प्रतिशत अंकों के साथ जिला मेरिट में तीसरा स्थान प्राप्त किया। यश पवार ने स्टेट मेरिट में दसवीं रैंक हासिल कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया था। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष नीरज नहारिया और कृतिक नागले ने शानदार प्रदर्शन कर सफलता का नया अध्याय जोड़ा है। विद्यालय प्रबंधन ने विद्यार्थियों की उपलब्धियों का श्रेय अनुभवी शिक्षकों के समर्पण, आधुनिक शिक्षण पद्धति, नियमित शैक्षणिक मूल्यांकन और अभिभावकों के सतत सहयोग को दिया। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में स्थापित श्री विनायकम स्पोर्ट्स अकादमी के माध्यम से खेल प्रतिभाओं को प्रारंभिक स्तर से पहचानकर वैज्ञानिक प्रशिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे वे जिला, राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें।

मुख्यमंत्री ने बैतूल के हिल स्टेशन कुकरु में सनसेट पॉइंट पर देखा मनोहारी सूर्यास्त

कुकरु की प्राकृतिक छटा से अभिभूत हुए मुख्यमंत्री

एस. द्विवेदी, बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को अपने बैतूल जिले के भैंसदेही प्रवास के दौरान जिले के प्रसिद्ध हिल स्टेशन कुकरु का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने कुकरु स्थित सिपना सनसेट पॉइंट पर पहुंचकर सूर्यास्त के मनोहारी एवं अलौकिक दृश्य का अवलोकन किया तथा क्षेत्र की अनुपम प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव कुकरु की रमणीय पर्वत श्रृंखलाओं, हरित वनों और प्राकृतिक वातावरण से अभिभूत नजर आए। उन्होंने कहा कि कुकरु हिल स्टेशन, प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक होकर

विकसित होने की अपार संभावनाएं रखता है। उन्होंने क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्राकृतिक संपदा से समृद्ध कुकरु न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेगा, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और आजीविका के नए अवसर भी सृजित करेगा।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री जनजातीय कार्य विभाग एवं क्षेत्रीय सांसद दुर्गादास उईके, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, भैंसदेही विधायक महेंद्र सिंह चौहान, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, मप्र. जन अभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त मोहन नागर, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार, भाजपा जिला अध्यक्ष एवं जिला विकास सलाहकार समिति सदस्य सुधाकर पवार, आयुक्त नर्मदापुरम श्रीकांत बनोठ, कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे, पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

भीमपुर जनपद पंचायत के सीईओ नानसिंह चौहान निलंबित

योजनाओं में अनियमितताओं पर आयुक्त नर्मदापुरम संभाग की कार्रवाई

बैतूल। भीमपुर जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी नानसिंह चौहान को विभिन्न शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में लगातार लापरवाही, प्रशासनिक निर्देशों की अवहेलना तथा विकास कार्यों में अपेक्षित प्रगति नहीं होने के आरोपों के चलते तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया हैं। यह कार्रवाई आयुक्त, नर्मदापुरम संभाग द्वारा जारी आदेश के तहत की गई है। निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय जिला पंचायत बैतूल रहेगा। सेवा आयुक्त द्वारा जारी आदेश में उल्लेख किया गया है कि कलेक्टर बैतूल की रिपोर्ट और समीक्षा बैठकों में बार-बार दिए गए निर्देशों के बावजूद कार्यप्रणाली में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। इसके चलते मध्यप्रदेश सिविल (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियम 1966 के तहत यह कार्रवाई की गई है। जारी आदेश के अनुसार भीमपुर जनपद में कई महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन में गंभीर अनियमितताएं सामने आई हैं। 39 समस्या ग्रस्त ग्रामों में से 18 गांवों की पेयजल समस्या अब भी लंबित है। जल गंगा अभियान-2026 के कार्यों में जिले में सबसे कम प्रगति दर्ज की गई। प्रधानमंत्री आवास योजना सहित अन्य: योजनाओं में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्य नहीं किए गए। इसके अलावा स्वच्छ भारत मिशन, संबल योजना, ई-केवाईसी, पोषण वाटिका सहित विभिन्न योजनाओं में भी लापरवाही पाई गई। उच्च न्यायालय से जुड़े मामलों में समय पर जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया तथा राजभवन के कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में भी गंभीर लापरवाही सामने आई। 2 मई 2026 की आगजनी घटना के दौरान बिना अनुमति मुख्यालय से अनुपस्थित रहने का उल्लेख भी आदेश में किया गया है। आयुक्त ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि कलेक्टर द्वारा समीक्षा बैठकों में कई बार निर्देश दिए गए, लेकिन कार्यप्रणाली में सुधार नहीं हुआ। इसके बाद विभागीय अनुशासनात्मक कार्रवाई का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, जिस पर विचार करते हुए सीईओ नानसिंह चौहान को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया। निलंबन के साथ ही विभागीय जांच भी जारी रहेगी। जांच में आरोप सिद्ध होने पर संबंधित अधिकारी के विरुद्ध नियमानुसार आगे की अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि विकास योजनाओं में लापरवाही और शासकीय कार्यों में उदासीनता किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

नीट छात्रा निक्की यादव की मौत

रैपिडो ड्राइवर बोला- 85 किमी तक खामोश रही, 350 देकर कहा- इनसे डिनर कर लेना

खरगोन (नप्र)। मध्य प्रदेश के इंदौर की 20 वर्षीय नीट अभ्यर्थी निक्की यादव की संदिग्ध मौत की जांच में हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। अब पुलिस पूछताछ में रैपिडो कैब चालक ने कई अहम जानकारियां दी हैं। चालक के मुताबिक, निक्की पूरे रास्ते खामोश रही और जब किराया चुकाया तो बची हुई रकम लौटाने के बजाय उससे कहा, इन पैसों से आप डिनर कर लेना।

मोबाइल पर नहीं की किसी से बात- करही थाना प्रभारी राजेंद्र इंगले ने शुक्रवार को बताया कि पुलिस ने 30 वर्षीय रैपिडो चालक गुरदीप को पूछताछ के लिए बुलाया था। उसका बयान दर्ज कर उसे फिलहाल छोड़ दिया गया है। पुलिस अब मामले के हर पहलू की जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार, निक्की यादव ने इंदौर रेलवे स्टेशन के बाहर से रैपिडो बाइक बुक कर बड़वाह के पास दादा दरबार स्थित नर्मदा पुल तक जाने का सफर तय किया था। करीब 85 किलोमीटर की यात्रा के

दौरान वह पूरी तरह शांत रही और उसने मोबाइल पर किसी से बात भी नहीं की।

रास्ते में बस पानी पिया- चालक ने पुलिस को बताया कि रास्ते में निक्की ने अपने मोबाइल कवर से 100 रुपये निकालकर उसे पानी की बोतल लाने के लिए दिए। जब वह बोतल लेकर लौटा तो निक्की एक किताब पढ़ रही थी। इसके बाद दोनों फिर गंतव्य की ओर रवाना हो गए।

आगे छोड़ने से भी किया मना- गुरदीप ने बताया कि रात को करीब साढ़े 11 बजे उसने निक्की को दादा दरबार नर्मदा पुल के पास उतारा। उसने पूछा भी कि यदि किसी कॉलोनी या किसी के घर जाना हो तो वह आगे छोड़ सकता है, लेकिन निक्की ने मना कर दिया।

1650 की जगह दिए 2000 रुपए- रैपिडो का किराया 1,650 रुपये था। निक्की ने चालक को 2,000 रुपये दिए। जब चालक ने बताया कि उसके पास छुट्टे नहीं हैं तो निक्की ने कहा, बाकी पैसे रख लो और आप इनसे डिनर कर लेना। इसके बाद वह अपना छोटा बैकपैक और मोबाइल लेकर वहां से चली गई।

पांच किलोमीटर दूर मिला शव- पुलिस के अनुसार, अगले दिन निक्की का शव नर्मदा नदी में पीटामली के पास मिला, जो उस स्थान से करीब पांच किलोमीटर दूर है जहां रैपिडो चालक ने उसे छोड़ा था। हालांकि उसका बैग और मोबाइल अब तक बरामद नहीं हो सके हैं। थाना प्रभारी ने बताया कि जांच के तहत रैपिडो चालक की कॉल डिटेल रिकॉर्ड भी खंगाली जा रही है। दूसरी ओर, निक्की के परिजनों ने अपहरण और हत्या की आशंका जताते हुए निष्पक्ष जांच की मांग की है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम सहित सभी वैज्ञानिक और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर मामले की जांच की जा रही है। फिलहाल मौत के कारणों को लेकर कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाला गया है।

संस्कारों से ही सुरक्षित रहेगी देश की संस्कृति

भोपाल (नप्र)। शंकराचार्य जिनालय में विराजमान आचार्य विराग विशुद्ध सागर महाराज के शिष्य उपाध्याय विश्रुत सागर महाराज के सान्निध्य में इन दिनों धार्मिक अनुष्ठानों के साथ संस्कृति और संस्कारों को सहेजने का विशेष अभियान चल रहा है।

प्रतिदिन मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं शांतिधारा के साथ श्रद्धालु धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं, वहीं बच्चों और युवाओं के लिए विशेष संस्कार कक्षाएं भी आयोजित की जा रही हैं।

उपाध्याय विश्रुत सागर महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी संस्कृति, भाषा, साहित्य, साधु-संतों की परंपरा और पुरातात्विक धरोहर में निहित होती है।

यदि इन मूल्यों को सुरक्षित रखा जाए, तो समाज की पहचान और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य भी सुरक्षित रहता है। उन्होंने बच्चों और युवाओं से आह्वान किया कि वे अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाएं, अच्छे संस्कारों को अपनाएं और समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करें।

प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया कि उपाध्याय श्री के प्रेरक प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक श्रद्धालुओं ने संयमित एवं संस्कारवान जीवन जीने का संकल्प लिया। श्रद्धालुओं ने श्रीफल भेंट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

नशा नाश की जड़, युवा नशे से दूर रहें : चौहान

अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का किया आयोजन

बैतूल/आठनेर। 26 जून अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस के अवसर पर नशामुक्त समाज के निर्माण के उद्देश्य से मप्र जन अभियान परिषद विकासखंड आठनेर के निर्देशन में शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय आठनेर में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जन अभियान परिषद विकासखंड आठनेर की विकासखंड समन्वयक मधु चौहान ने नशे के बढ़ते दुष्प्रभावों पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि नशा केवल व्यक्ति को ही नहीं,बल्कि पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है।उन्होंने कहा कि शराब, तंबाकू, गुटखा, सिगरेट तथा अन्य मादक पदार्थों का सेवन धीरे-धीरे व्यक्ति के शारीरिक,मानसिक,सामाजिक और आर्थिक जीवन को खोखला कर देता है।यह बिल्कुल सही बात है कि नशा ही नाश की जड़ है। आठनेर नगर मंडल अध्यक्ष एवं परामर्शदाता गोवर्धन राने ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि कि नशे की लत से अनेक गंभीर बीमारियां,मानसिक तनाव,अवसाद,हृदय एवं फेफड़ों के रोग,कैंसर जैसी घातक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसके साथ ही पारिवारिक कलह, घरेलू हिंसा,सडक़

दुर्घटनाएँ,अपराध, बेरोजग़ारी,आर्थिक तंगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट जैसी समस्याएँ भी नशे की देन हैं। हम कितने महामूर्ख हैं कि हम नशे के रूप में पैसा देकर बीमारियां खरीदते हैं। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं से अपील करते हुए कहा कि क्षणिक आनंद के लिए अपनाई गई नशे की आदत जीवनभर का अभिशाप बन सकती है,इसलिए नशे से दूर रहकर धर्म,संस्कृति,समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता आशुतोष सिंह चौहान ने जानकारी देते हुए कहा कि नशे की रोकथाम केवल कानून के माध्यम से संभव नहीं है,बल्कि परिवार,विद्यालय,सामाजिक संस्थाओं और प्रत्येक नागरिक की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। यदि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं नशे से दूर रहे और अपने आसपास के लोगों को भी इसके दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करे तो एक स्वस्थ,सुरक्षित और समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सकता है। अंत में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने नशे का सेवन न करने, दूसरों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करने तथा अपने क्षेत्र को नशामुक्त बनाने के लिए जनजागरण अभियान चलाने का सामूहिक संकल्प लिया।कार्यक्रम में मुख्य रूप से जनपद सदस्य राजू सलामे, बरखेड़ पंचायत की सरपंच निशा धुर्वे, पार्षद पूनम चढ़ोकार, परामर्शदाता दिनेश साकरे, दीपाली पातुलकर,राधिका बारपेटे,अंकित सातपुते सहित बड़ी संख्या में सी एम सी एल डी पी छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन नशा छोड़ें, जीवन जोड़ें और स्वस्थ युवा,सशक्त भारत के प्रेरक संदेश के साथ हुआ।

मराठी सिनेमा का स्वर्णिम दौर

'सैराट' से 'राजा शिवाजी' तक राष्ट्रीय प्रभाव

भारतीय सिनेमा की चर्चा जब भी होती है, लंबे समय तक हिंदी, तमिल और तेलुगु फिल्मों का ही अधिक उल्लेख किया जाता रहा है। हालांकि पिछले एक दशक में मराठी सिनेमा ने अपनी अलग पहचान बनाते हुए यह साबित कर दिया है कि दमदार कहानी, सशक्त अभिनय और सांस्कृतिक जुड़ाव के बल पर क्षेत्रीय फिल्में भी राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा प्रभाव छोड़ सकती हैं। मराठी फिल्मों ने न केवल दर्शकों का भरोसा जीता है, बल्कि बॉक्स ऑफिस पर भी उल्लेखनीय सफलता हासिल की है।

मराठी सिनेमा की सफलता का सबसे बड़ा आधार उसकी विषयवस्तु रही है। यहां फिल्मों का केंद्र केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति, पारिवारिक रिश्ते, इतिहास और मानवीय संवेदनाएं भी रही हैं। यही कारण है कि मराठी फिल्मों को महाराष्ट्र के बाहर भी सराहना मिलने लगी है। हाल के वर्षों में मराठी सिनेमा की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक फिल्म 'राजा शिवाजी' रही है। 1 मई 2026 को रिलीज हुई यह फिल्म महान मराठा योद्धा छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन और संघर्ष पर आधारित है। फिल्म में रितेश देशमुख ने प्रमुख भूमिका निभाई, जबकि संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, विद्या बालन, जेनेलिया देशमुख, फरदीन खान और भाग्यश्री जैसे कलाकार भी महत्वपूर्ण किरदारों में दिखाई दिए। सलमान खान के विशेष कैमियो ने फिल्म को अतिरिक्त चर्चा दिलाई। भव्य निर्माण, ऐतिहासिक प्रस्तुति और मजबूत कलाकारों के कारण फिल्म ने दर्शकों को आकर्षित किया और लगभग 117.79 करोड़ रुपये की कमाई कर मराठी सिनेमा के इतिहास में नया कीर्तिमान स्थापित किया।

मराठी फिल्मों की लोकप्रियता की बात हो और 'सैराट' का उल्लेख न हो, ऐसा संभव नहीं है। वर्ष 2016 में रिलीज हुई इस फिल्म ने भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा का परिदृश्य बदल दिया था। निर्देशक नागराज मंजुले की इस फिल्म में रिंकू राजगुरु और आकाश ठोसर मुख्य भूमिकाओं में थे। जातीय भेदभाव और प्रेम की कहानी पर आधारित इस फिल्म ने युवाओं के साथ-साथ परिवारों को भी प्रभावित किया। फिल्म का संगीत भी अत्यंत लोकप्रिय हुआ। 'सैराट' ने विश्व भर में लगभग 110 करोड़ रुपये का कारोबार किया और मराठी फिल्मों के लिए नए बाजारों के द्वार खोल दिए। इसकी सफलता इतनी बड़ी थी कि बाद में हिंदी में इसका रीमेक 'धड़क' बनाया गया।

साल 2023 में रिलीज हुई 'बाईपण भारी देवा' ने यह साबित किया कि पारिवारिक विषयों पर बनी फिल्में भी व्यावसायिक रूप से सफल हो सकती हैं। छह बहनों की कहानी पर आधारित इस फिल्म ने महिलाओं के अनुभवों, रिश्तों और आत्मविश्वास को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। रोहिणी हट्टंगडी, वंदना गुप्ते, सुकन्या कुलकर्णी, सुचित्रा बांदेकर, दीपा परब और शिल्पा नवलकर के अभिनय को खूब सराहा गया। फिल्म ने लगभग 90.50 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जो मराठी सिनेमा के लिए बड़ी उपलब्धि मानी गई। इसी तरह रितेश देशमुख और जेनेलिया देशमुख अभिनीत 'वेद' ने भी दर्शकों का दिल जीता। वर्ष 2022 में आई यह रोमांटिक ड्रामा फिल्म भावनात्मक कहानी और संगीत के कारण लोकप्रिय हुई। फिल्म में सलमान खान का विशेष कैमियो भी आकर्षण का केंद्र बना। लगभग 73 करोड़ रुपये की कमाई के साथ यह फिल्म वर्ष की सबसे सफल मराठी फिल्मों में शामिल रही।

वहीं 'देऊळ बंद 2' ने भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। स्नेहल तरडे और मोहन जोशी अभिनीत इस फिल्म ने सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों को मनोरंजक अंदाज में प्रस्तुत किया। हालांकि इसकी कमाई अन्य फिल्मों की तुलना में कम रही, फिर भी यह चर्चा में बनी रही और मराठी सिनेमा के विविध विषयों को सामने लाने में सफल रही। मराठी सिनेमा की बढ़ती लोकप्रियता के पीछे कई कारण हैं। पहला, यहां के फिल्मकार स्थानीय संस्कृति और समाज से जुड़े विषयों को ईमानदारी से प्रस्तुत करते हैं। दूसरा, डिजिटल मंचों के विस्तार ने मराठी फिल्मों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब महाराष्ट्र से बाहर रहने वाले दर्शक भी आसानी से मराठी फिल्मों को देख सकते हैं।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि हिंदी फिल्म उद्योग के कई बड़े कलाकार अब मराठी फिल्मों से जुड़ रहे हैं। सलमान खान, संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, विद्या बालन और अन्य कलाकारों की भागीदारी ने मराठी फिल्मों की पहुंच और चर्चा को बढ़ाया है। इसके साथ ही रितेश देशमुख जैसे सितारे मराठी सिनेमा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में मराठी सिनेमा और अधिक मजबूत होगा। ऐतिहासिक कथाओं, सामाजिक मुद्दों, पारिवारिक कहानियों और नए प्रयोगों के कारण यह उद्योग लगातार विकसित हो रहा है।

दर्शकों की बदलती पसंद भी अब केवल बड़े बजट या बड़े सितारों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे अच्छी कहानी और गुणवत्तापूर्ण प्रस्तुति को प्राथमिकता दे रहे हैं। कुल मिलाकर मराठी सिनेमा आज भारतीय फिल्म उद्योग का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। सैराट, वेद, बाईपण भारी देवा और 'राजा शिवाजी' जैसी फिल्मों ने यह सिद्ध कर दिया है कि क्षेत्रीय सिनेमा भी राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव छोड़ सकता है। आने वाले समय में मराठी फिल्मों से और अधिक रचनात्मक, प्रभावशाली और सफल प्रस्तुतियों की उम्मीद की जा सकती है।

'मिर्जापुर' में मुन्ना भैया की दमदार वापसी

चर्चित वेब सीरीज 'मिर्जापुर' अब फिल्म के रूप में दर्शकों के सामने आने जा रही है। फिल्म के निर्माण से जुड़े फरहान अख्तर ने 'मिर्जापुर द मूवी' के नए पोस्टर जारी कर दिए हैं। पोस्टरों में गुड्डू भैया, कालीन भैया और मुन्ना भैया के किरदारों की झलक दिखाई गई है, जिसने प्रशंसकों के बीच उत्साह बढ़ा दिया है। साथ ही यह भी जानकारी दी गई है कि फिल्म का टीजर जल्द जारी किया जाएगा। पोस्टरों में अली फजल के गुड्डू भैया, पंकज त्रिपाठी के कालीन भैया और दिव्येंदु के मुन्ना भैया अलग अंदाज में नजर आ रहे हैं। तीनों किरदारों की मौजूदगी ने कहानी को लेकर नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। हर पोस्टर के साथ लिखी गई पंक्तियां यह संकेत देती हैं कि इस बार कहानी में कई पुराने विवादों और अधूरे हिसाबों का निपटारा देखने को मिल सकता है।

फरहान अख्तर ने सोशल मीडिया पर सबसे पहले अली फजल के किरदार का पोस्टर साझा करते हुए लिखा 'शुरू मजबूरी में किए थे, अब मजा आ रहा है। गुड्डू भैया बड़े पर्दे पर आ रहे हैं।' इसके बाद अन्य प्रमुख किरदारों के पोस्टर भी सामने आए, जिन्हें दर्शकों ने खूब पसंद किया। 'मिर्जापुर द मूवी' की घोषणा वर्ष 2024 में एक विशेष वीडियो के जरिए की गई थी, जिसमें अली फजल, पंकज त्रिपाठी और दिव्येंदु एक साथ दिखाई दिए थे। गुरमीत सिंह के निर्देशन में बनी यह फिल्म हिंदी और तेलुगु भाषा में रिलीज होगी। पहले इसे सिनेमाघरों में प्रदर्शित किया जाएगा, जबकि बाद में इसके ओटीटी मंच पर आने की संभावना है।

रियल बॉक्स

'लगान' यानी सिनेमा की सांस्कृतिक विजय गाथा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

आज से पच्चीस साल पहले 15 जून 2001 को जब निर्देशक आशुतोष गोवारिकर और अभिनेता-निर्माता आमिर खान की फिल्म 'लगान' सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुई, तब शायद किसी ने नहीं सोचा था कि यह फिल्म भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक मील का पत्थर बन जाएगी। 25 साल बाद भी 'लगान' केवल एक सफल फिल्म नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक दस्तावेज, एक सामाजिक रूपक और भारतीय सिनेमा की वैश्विक पहचान का प्रतीक मानी जाती है। ऐसे दौर में जब हिंदी सिनेमा रोमांस, एक्शन और पारिवारिक ड्रामों के इर्द-गिर्द घूम रहा था, 'लगान' ने दर्शकों को 19वीं सदी के एक काल्पनिक गांव 'चंपानेर' में पहुंचाकर औपनिवेशिक शोषण, सामूहिक संघर्ष, आत्मसम्मान और खेल भावना की ऐसी कहानी सुनाई, जिसने भाषा, वर्ग और भूगोल की सीमाओं को पार कर लिया। यही कारण है कि ढाई दशक बाद भी यह फिल्म दर्शकों की स्मृतियों में उतनी ही ताजा है, जितनी अपनी रिलीज के समय थी।

'लगान' के निर्माण का समय काल वह दौर था, जब आमिर खान सफल अभिनेता बन गए थे। लेकिन, निर्माता बनने को लेकर उनके मन में गहरी झिझक थी। उन्होंने अपने पिता और निर्माता ताहिर हुसैन को आर्थिक संकटों और कर्ज के बोझ से गुजरते देखा था। इसलिए उन्होंने स्वयं से वादा किया था कि कभी फिल्म नहीं बनाएंगे। लेकिन, आशुतोष गोवारिकर की पटकथा ने उन्हें अपना फैसला बदलने पर मजबूर कर दिया। आमिर स्वयं स्वीकार करते हैं, कि उन्होंने पहले कई बार कहा था कि वे कभी निर्माता नहीं बनेंगे। लेकिन, 'लगान' की कहानी इतनी प्रभावशाली थी कि उन्होंने जोखिम उठाने का फैसला किया। यही जोखिम आगे चलकर 'आमिर खान प्रोडक्शंस' की नींव बना। विडंबना यह है कि जिस फिल्म ने उन्हें निर्माता के रूप में स्थापित किया, उसी फिल्म के बारे में उन्हें शुरुआत में आशंकाएं भी थीं। आशुतोष की पहले की दो फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सफल नहीं रही थीं। ऐसे में कहानी पर भरोसा होने के बावजूद असफलता का डर बना हुआ था। मगर इतिहास ने साबित किया कि यह जोखिम भारतीय सिनेमा के सबसे सफल दांव में से एक था।

पहली नजर में 'लगान' एक क्रिकेट मैच की कहानी लगती है, लेकिन इसकी वास्तविक शक्ति उसके प्रतीकवाद में छिपी है। फिल्म में क्रिकेट केवल खेल नहीं, बल्कि सत्ता और प्रतिरोध के बीच संघर्ष का माध्यम बन जाता है। भुवन और उसके गांव के लोग अंग्रेजों के खिलाफ हथियार नहीं उठाते, बल्कि उन्हीं के खेल में उन्हें चुनौती देते हैं। यह औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध आत्मविश्वास की लड़ाई होती है। फिल्म का चरम दृश्य वह था जहां अंतिम गेंद तक परिणाम अनिश्चित रहता है। भारतीय दर्शकों के लिए केवल खेल का रोमांच नहीं, बल्कि अन्याय के खिलाफ जीत की भावनात्मक अनुभूति बन जाता है। यही कारण है कि 'लगान' का प्रभाव समय के साथ कम नहीं हुआ। हर पीढ़ी इसे अपने संदर्भ में पढ़ती है, कभी संघर्ष की कहानी के रूप में, कभी नेतृत्व के पाठ के रूप में और कभी सामूहिकता की शक्ति के उदाहरण के रूप में।

दिलचस्प तथ्य यह है कि आमिर खान स्वयं 'लगान' में अपने अभिनय को सबसे कम तैयारी वाला मानते हैं। उनका कहना है, कि निर्माता की जिम्मेदारियों ने उनका अधिकांश समय और ऊर्जा ले ली। शूटिंग, बजट, लोकेशन, तकनीकी व्यवस्थाएं और पूरी यूनिट की जिम्मेदारी उनके कंधों पर थी। इसके बावजूद भुवन का चरित्र भारतीय सिनेमा के सबसे यादगार नायकों में गिना जाता है। इसका कारण अभिनय की तकनीकी तैयारी से अधिक चरित्र की सच्चाई और आमिर की सहजता थी। भुवन न तो पारंपरिक सुपर हीरो है और न किसी असाधारण शक्ति से लैस व्यक्ति। वह एक सामान्य किसान है, जो अपने विश्वास और साहस के दम पर असंभव को संभव बनाने का प्रयास करता है।

फिल्म की शूटिंग गुजरात के कच्छ क्षेत्र में हुई। आज जब कलाकार फिल्म के 25 वर्ष पूरे होने पर उन दिनों को याद करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि 'लगान' का निर्माण किसी युद्ध काल से कम नहीं था। ब्रिटिश अधिकारी कैप्टन एंड्रू रसेल की भूमिका निभाने वाले अभिनेता पॉल ब्लैकथॉर्न ने शूटिंग को 'प्रेशर कुकर' जैसा अनुभव बताया। उनके अनुसार, चार महीनों तक भारतीय और ब्रिटिश कलाकारों, स्थानीय ग्रामीणों और विशाल तकनीकी दल के साथ काम करना बेहद चुनौतीपूर्ण था। कच्छ की भीषण गर्मी, धूल भरी आंधियां और टिड्डियों के झुंड कई बार शूटिंग रोकने के लिए मजबूर कर देते थे। लेकिन, इन कठिन परिस्थितियों ने फिल्म के यथार्थवाद को और मजबूत बनाया। स्क्रीन पर दिखाई देने वाली धूप, पसीना और संघर्ष वास्तविक थे, किसी कृत्रिम सेट का परिणाम नहीं।

'लगान' के अधिकांश सहायक पात्र आज भी दर्शकों की स्मृति में जीवित हैं। इसका कारण उनकी प्रामाणिकता है। मूक ढोल वादक बाघा की भूमिका निभाने वाले अमीन हाजी ने इस किरदार को जीवंत बनाने के लिए मूक-बधिर लोगों और उनके परिवारों से संवाद किया। उन्होंने केवल अभिनय नहीं किया, बल्कि उस जीवन को समझने की कोशिश की, जिसे वे पर्दे पर प्रस्तुत कर रहे थे। परिणामस्वरूप बाघा फिल्म के सबसे संवेदनशील और लोकप्रिय पात्रों में शामिल हो गया। इसी तरह गोली की भूमिका निभाने वाले दया शंकर पांडे का अनोखा गेंदबाजी एक्शन आज भी चर्चा का विषय है। महीनों की मेहनत और अभ्यास के बाद तैयार की गई उनकी गेंदबाजी शैली इतनी प्रभावशाली थी, कि फिल्म देखने के बाद सौरव गांगुली और वीरेंद्र सहवाग जैसे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों को भी विश्वास नहीं हुआ कि यह किसी कंप्यूटर तकनीक का परिणाम नहीं है।

'लगान' ने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ी। वर्ष 2002 में इसे अकादमी पुरस्कार (ऑस्कर) में सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा फिल्म श्रेणी के लिए नामांकन प्राप्त हुआ। यह उपलब्धि उस समय भारतीय सिनेमा के लिए असाधारण मानी गई। फिल्म ने आठ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी जीते। संगीत, गीत, कला निर्देशन, वेशभूषा, कोरियोग्राफी और लोकप्रिय फिल्म जैसी विभिन्न श्रेणियों में मिले सम्मान इस बात का प्रमाण थे कि 'लगान' केवल व्यावसायिक सफलता नहीं, बल्कि कलात्मक उत्कृष्टता का भी उदाहरण थी। यदि फिल्म की कथा उसका शरीर है, तो एआर रहमान का संगीत उसकी आत्मा है। 'घनन घनन' में बारिश की प्रतीक्षा, 'राधा कैसे न जले' में प्रेम और ईर्ष्या, 'ओ पालनहारे' में आध्यात्मिक विश्वास, 'चले चलो' में संघर्ष की ऊर्जा और 'मितवा ओ मितवा' में आशा की धड़कन सुनाई देती है। जावेद अख्तर के गीतों और रहमान की धुनों ने फिल्म को भावनात्मक ऊंचाई प्रदान की। आज भी इन गीतों को सुनते ही दर्शक सीधे चंपानेर पहुंच जाते हैं। यही किसी महान फिल्म संगीत की सबसे बड़ी सफलता होती है।

फिल्म से जुड़ा एक भावनात्मक प्रसंग इसकी पहली सार्वजनिक स्क्रीनिंग से जुड़ा है। शूटिंग के दौरान कच्छ के ग्रामीण कलाकारों और स्थानीय लोगों ने आमिर खान से पूछा था कि क्या उन्हें फिल्म देखने का अवसर मिलेगा। क्योंकि, उनके क्षेत्र में सिनेमाघर नहीं थे। आमिर ने वादा किया कि फिल्म की पहली सार्वजनिक स्क्रीनिंग वहीं होगी। रिलीज से पहले पूरी टीम फिल्म की प्रिंट लेकर भुज पहुंची और स्थानीय लोगों के लिए विशेष प्रदर्शन आयोजित किया। ब्रिटिश कलाकार भी उसमें शामिल हुए। यह घटना बताती है कि 'लगान' केवल एक फिल्म परियोजना नहीं थी, बल्कि उसमें शामिल लोगों के साथ भावनात्मक साझेदारी भी थी।

25 सालों बाद भी 'लगान' का आकर्षण इसलिए कायम है, क्योंकि यह अपने समय की सीमाओं में बंधी फिल्म नहीं है। इसमें राष्ट्रवाद है, लेकिन उग्रता नहीं; मनोरंजन है, लेकिन सतहीपन नहीं; इतिहास है, लेकिन बोझिलता नहीं। यह फिल्म हमें बताती है कि नेतृत्व क्या होता है, टीमवर्क कैसे काम करता है, विश्वास किस तरह असंभव दिखने वाले लक्ष्य को संभव बना सकता है और संस्कृति किस प्रकार प्रतिरोध का माध्यम बन सकती है। 'लगान' उन दुर्लभ फिल्मों में है, जो हर बार देखने पर नया अर्थ देती हैं। यही कारण है कि ढाई दशक बाद भी भुवन की वह आखिरी गेंद, कप्तान रसेल की बेचैनी, गांव वालों की उम्मीदें और 'चले चलो' का स्वर दर्शकों के भीतर गूंजता रहता है। शायद आमिर खान के चाचा नासिर हुसैन सही कहते थे 'महान फिल्में बनाई नहीं जातीं, वे बस हो जाती हैं।' यह ऐसी ही एक फिल्म है, जो बनी नहीं, बल्कि भारतीय सिनेमा के इतिहास में घटित हुई।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

मिट्टी से खेलते हो बार बार किस लिए

अशोक जोशी

इन दिनों राजनीति में मिट्टी की चर्चा कुछ खास ही हो रही है। मिट्टी का मिजाज ही कुछ ऐसा ही है कि जो कोई इसे स्पर्श करता है वह उससे चिपक ही जाती है। यह बात अलग है कि कुछ लोग मिट्टी को मां मानते हैं और कुछ

व्यवसाय और समृद्ध होने का पैमाना। मिट्टी को लेकर एक कहावत भी है 'सबै भूमि गोपाल की।' लेकिन, गोपाल नाम कुछ अप्रासंगिक लगता है। गोपाल तो गाय पालता है और मिट्टी से जुड़े लोगों को तो व्यावहारिक रूप से भूपालक कहना ज्यादा उचित लगता है!

हिंदी सिनेमा देखा जाए तो इन दिनों आसमान पर बादल घुमड़ रहे हैं और बारिश की बूंदों से धरती पर माटी की सौंधी सौंधी सुगंध महक रही है। हमारे घर आंगन में माटी की महक तो एक अजीब सुरूर पैदा करती है। लेकिन, जब यही महक जब सिनेमा के पर्दे पर आती है तो उसमें भी एक खास चमक होती है। यही कारण है कि थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद फिल्मकार हमारी माटी या धरती को याद कर ऐसी फिल्में बनाते हैं जो जनमानस को उद्वेलित कर सिनेमा हाल में तालियां और बॉक्स आफिस पर पैसा बटोरने में कामयाब हो जाती है।

यदि बीते जमाने की बात करें तो तब भी हमारी माटी बॉक्स आफिस के लिए सोना उगलती थी और आज भी फिल्मी माटी सोना और हीरे मोती उगलने की परम्परा का बदस्तूर कायम किए हुए हैं। महबूब खान की फिल्म 'औरत' और उसका रंगीन संस्करण 'मदर इंडिया' भी देश की मिट्टी से ही जुड़ी हुई थी। इस फिल्म में माटी की महक उसके रंग और उससे रिसता लहू सब कुछ इतनी शिद्दत के साथ फिल्माया गया था कि पूरे फिल्म के दौरान दर्शक माटी से जुड़ा पाता था। इसके बाद 'दो बीघा जमीन' में भी इसी माटी की कहानी कही गई थी कि किस तरह एक माटी पुत्र अपनी खेत की माटी को बचाने के लिए पूरा जीवन झोंक देता है और उसे इस खेत की एक मुट्ठी मिट्टी भी नसीब नहीं होती है।

हीरा मोती, परख और 'गोदान' सभी फिल्में हिन्दुस्तानी माटी से जुड़ी हुई थी। नए ज़माने की फिल्मों में स्वदेश और लगान को इससे जोड़ा जा सकता है। इसी से प्रेरित होकर मनोज कुमार ने 'उपकार' ने माटी के माध्यम से सोना

और हीरा मोती उगलवाने का प्रयास कर अपनी झोली को हीरे मोती भरने का काम किया लेकिन माटी से सोना उलीचने के बाद मनोज कुमार माटी को छोडकर महंगाई और रोटी कपडा मकान से लेकर शोर में उलझते चले गए और माटी से शने-शने दूर होते चले गए। हिंदी फिल्मों में माटी का उपयोग कर दर्शकों की भावना उभारने के खूब प्रयास हुए हैं। कहीं नायक विदेश से आकर देश की मिट्टी से जुड़कर रहने लगता है।

कहीं वह अपने माथे पर माटी का तिलक लगाकर दर्शकों की तालियां बटोरने में कामयाब रहता है। कहीं माटी के बंटवारे को लेकर दर्शकों के बीच एक तनावपूर्ण स्थिति कायम की जाती है तो कहीं कहीं माटी के सौंदर्य की झलक दिखाकर दर्शकों का दिल खुश करने के हथकंडे अपनाए जाते है। हिंदी फिल्मों में जहां

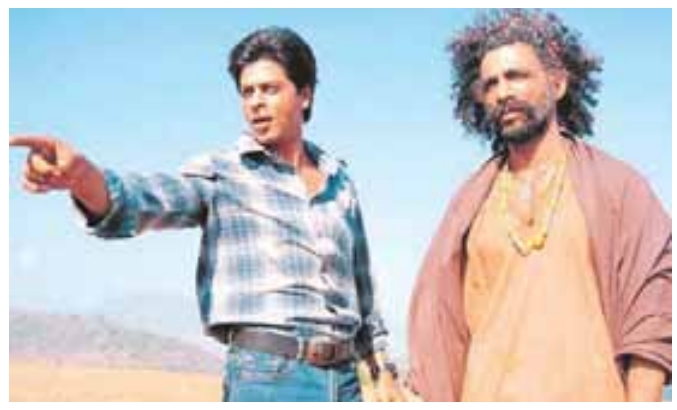

फिल्मों का विषय माटी से आधारित होता है तो नायक और नायिका को माटी पुत्र या माटी पुत्री बनाकर पेश किए जाने की परम्परा भी चलती आयी है। यह बात अलग है कि अधिकांश फिल्मों में केवल औपचारिकता ही निभाई जाती है। नायक अगर किसान है तो उसके खेत की फसल को साहुकार हड़पने का प्रयास करता है और नायक इसका विरोध करता है तो पुलिस आकर पकड़ ले जाती है।

ऐसे प्रकरण हर फिल्म में आए हैं। यदि फिल्मी हस्तियों को देखा जाए तो पुरानी फिल्मों में माटी पुत्र बनने का काम केवल दिलीप कुमार को ही ज्यादा रास आया है। राज कपूर और देव आनंद ने शायद ही किसी फिल्म में धोती बंडी पहनी हो। फिल्मों के मध्ययुग में जब माटी से जुड़ी फिल्में आयी तो राज कुमार, जीतेन्द्र, धर्मेन्द्र, राजेन्द्र कुमार, ऋषि कपूर, सलमान, शाहरुख खान और गोविन्दा से लेकर सदी के महानायक अमिताभ सभी माटी पुत्र बनकर इनका मखौल उड़ाते दिखाई दिए। यह नाम के लिए माटी पुत्र थे, लेकिन इनकी हरकतें कुछ रीलों तक ही सीमित रही। इसके बाद यह शहर पहुंचकर कीचड सने कपड़े उतारकर साला मैं तो साहब बन गया की तर्ज पर अपनी छबि बदलकर नायिका के साथ पेड़ों के इर्द गिर्द प्रेम गीत गाने लगे।

फिल्में और उनके फिल्मों के साथ ही मिट्टी नहीं जुड़ी है, बल्कि कुछ सितारे भी ऐसे है जिनके साथ मिट्टी का नाता जोडा गया है। यह कलाकार ऐसे हैं जो तमाम स्टार्स और सितारों की भीड़ में अपना अलग वजूद रखते हैं। संजीव कुमार, अभय देओल, धर्मेन्द्र और ऋषि कपूर जैसे कुछ कलाकार इसी श्रेणी में आते हैं जो समय के बदलते दौर में भी अपनी जगह पर अडीग रहे। इन सितारों को मिट्टी पकड़ सितारे कहा गया है। हिन्दी फिल्मों के शीर्षक में भी माटी खूब महकी है। धरती, धरती कहे पुकार के, माटी मांगे खून, धरती मैया, धरती पुत्र और मिट्टी के खिलौने जैसी फिल्मों में केवल नाम ही सब कुछ था, फिल्म कहीं से भी माटी से जुड़ी नहीं थी। इसी तरह फिल्मी गीतों में भी माटी और धरती का भरपूर उपयोग किया गया। इनमें मेरे देश की धरती सोना उगले, धरती सुनहरी अंबर नीला, धरती चांद सितारे, धरती कहे पुकार के, धरती मेरी माता पिता आसमान, धरती का प्यार पले, धरती की रानी, यह माटी सभी की कहानी कहेगी, मिट्टी से खेलते हो बार बार किसलिए, तेरी मिट्टी में मिला जांवा जैसे गीतों ने खासी लोकप्रियता बटोरी है।

काश, विजय चौहान सरीखे अनेक शिक्षक देश में होते

जीवन अनुभव

श्याम बोहरे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

1963 से 1969 तक सागर विश्व विद्यालय में छात्र जीवन के दौरान हमारे कुछ शिक्षक थे जो कक्षा में तो प्रभावी शिक्षण करते ही थे। अपने सामाजिक सरोकारों की वजह से कक्षा के बाहर भी सक्रिय रहकर छात्रों का मार्गदर्शन और मदद करते रहते थे। राजनीति शास्त्र विभाग में अध्यापक डाक्टर विजय चौहान हिन्दी के अच्छे कहानीकार के साथ साथ नाटक के प्रतिभाशाली निर्देशक और सृजनशील व्यक्तिव के धनी थे। विश्व विद्यालय के छात्र जो कविता, कहानी एवं अन्य विधाओं के लेखक थे, नाटक, संगीत,चित्रकला आदि रचनात्मक क्षेत्रों में सक्रिय होते थे, उनमें से अधिकांश उनके जीवन्त सम्पर्क में रहते। साहित्यकार अमृतराय अपने लिखे नाटक चिंदियो की झालर के प्रकाशन से पहले मंचीय प्रदर्शन देखने के लिए सागर आये।

विजय चौहान उन्हें छात्रावास ले गए और युवा कहानीकार कृष्ण कुमार से यह कहते हुए मिलवाया कि ये उभरते हुए प्रतिभाशाली कहानीकार हैं जिनकी अमुक कहानी आपने नई कहानियां में प्रकाशित की थी। अमृतराय सरीखे प्रसिद्ध लेखक उनसे मिलने कमरे पर आए यह छात्र कृष्ण कुमार के लिए बहुत बड़ी बात थी। आज कृष्ण कुमार देश के जाने माने शिक्षाविद हैं। कोई मठाधीश किस्म के अध्यापक होते तो छात्र को अपने घर बुलवाते और अहसान जताते हुए कुछ इस तरह कहते कि यह लड़का अच्छा लिख रहा है। इसे मैं विकसित कर रहा हूं, आदि आदि। यहीं विजय चौहान अन्य सामान्य शिक्षकों से अलग थे। विजय चौहान ने छात्र प्रतिभाओं को पहचाना, उन्हें अपनेपन के साथ तराशा,प्रोत्साहित किया, भरपूर सहयोग दिया लेकिन कभी उसे अहसान का अहसास नहीं होने दिया।

निर्भीकता,साहस और अन्याय के खिलाफ खड़े होना उन्हें प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ओर कवियत्री अपनी मां सुभद्रा कुमारी चौहान और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता लक्षमण सिंह चौहान से विरासत में मिला जिसे वे परिमार्जित करते रहे। 1969- 70 में छात्र नेता परीक्षाएं आगे बढ़वाने का दबाव बना रहे थे। वहीं कुछ छात्र समय पर परीक्षा के लिए कोशिश कर रहे थे जिससे छात्रों का नुकसान न हो, अनेकों प्राध्यापक भी समय पर परीक्षा के पक्ष में थे लेकिन समर्थन ड्राइंग रुम चर्चा तक सीमित थी। विजय चौहान खुलकर सामने आकर सहयोग कर रहे थे, वे समय पर परीक्षा चाहने वाले छात्रों के साथ कुलपति के पास भी जाते,एकबार कुलपति ने तंज करते हुए कहा, अच्छा आप भी इनके साथ? विजय चौहान ने कहा शिक्षक होने नाते मैं छात्र हित में ही हो सकता हूं वरना असामाजिक तत्वों के साथ तो आपका आशीर्वाद है ही।

यद्यपि मैं राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी नहीं था फिर भी अपनी सक्रियता के कारण उनके सम्पर्क में था। बात 1969 की है जब मैं एमए लोक प्रशासन के पूर्वाद्ध का छात्र था, पढ़ाई ढंग से की नहीं थी जिसके कारण यह विश्वास नहीं था कि पास हो सकता हूं। परीक्षा के चार दिन बचे थे, मुझे मलेरिया इन्सपेक्टर की नौकरी मिल गई थी। मैं इस उधेडबुन में था कि नौकरी ज्वाइन करुं या परीक्षा दूं? आत्मविश्वास की कमी और राजनीति शास्त्र के सिद्धांत और व्यवहार का पहला पेपर था जो बिलकुल समझ में नहीं आया था, इस कारण लगभग तय कर लिया था कि कल जाकर नौकरी ज्वाइन कर लूंगा। मैं सड़क के किनारे किसी का इंतजार कर रहा था। उसी समय स्कूटर से विजय चौहान वहां से निकले परेशानी के कारण मैंने ध्यान ही नहीं दिया, लेकिन वे समझ गए कि मैं सामान्य स्थिती में नहीं हूं, वे वापस लौटे और परेशानी का कारण जानना चाहा, टालते हुए मैंने कहा कुछ नहीं। लेकिन उनकी पारखी नजरों से अपनी परेशानी छिपा नहीं सका। मुझे अपने घर ले गए, और फिर पूछा कि बताओ क्या बात है? मैंने फिर से टालने की कोशिश की,वे कुछ नहीं बोले, चाय नाश्ता कराया। थोड़ी-बहुत अनौपचारिक बातचीत करके बोले हां तो बताओ? उन्हें बताया कि नौकरी मिल गई है तो कल जाकर ज्वाइन करुंगा,चार दिन बाद जो पहला पेपर है वह एकदम समझ के बाहर है, पास तो होऊंगा नहीं इसलिए यह नौकरी मिल गई है वही करुंगा। विजय चौहान ने मेरा नियुक्ति पत्र फाड़कर फेक दिया और कहा इस साल की परीक्षा दो, बचेगा एक साल, तुम्हारे पिताजी यदि रोटी न खिला सकें तो कल से मेरे घर रोटी खाना। एक साल की ही तो बात है, आसानी से निकल जाएगा। हो सकता है कुछ बेहतर तुम्हारा इंतजार कर रहा हो। वरना इस तरह की नौकरी तो कभी भी मिल जायेगी। मेरे यह कहने पर कि पिताजी तो चाहते हैं कि मैं पढ़ाई जारी रखूं। उन्होंने कहा कि अब क्या समस्या है? मैंने बताया कि पहला पेपर समझ ही नहीं आया। वे तुरन्त ही मुझे उस पेपर के सम्बन्ध में बताने लगे। लगभग तीन घंटे में उन्होंने जिस तरह से समझाया मेरा खोया हुआ आत्मविश्वास वापस आ गया। दो पुस्तकों के नाम बताते हुए कहा कि इन्हें पढ़ो फिर कहीं दिक्कत हो तो आ जाना। विषय समझ में आया तो पढ़ने में मन भी लग गया। लिखने की गति धीमी होने के कारण उस पेपर में सब जानते हुए भी केवल 80 नम्बर का ही लिख पाया और समय समाप्त हो गया। उस पेपर में मुझे 58 अंक मिले जो मेरी कक्षा के अन्य साथियों से सबसे अधिक थे। विजय चौहान का यह कहना कि हो सकता है कुछ बेहतर तुम्हारा इंतजार कर रहा हो सही साबित हुआ। एमए पास करने के बाद मुझे शासकीय महाविद्यालय में अध्यापन का काम मिल गया। आठ साल अध्यापन के बाद प्रतिनियुक्ति पर भारत सरकार में उसके बाद मध्यप्रदेश प्रशासन अकादमी और महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामीण विश्वविद्यालय में काम का अवसर मिला।

उस दिन यदि विजय चौहान न मिले होते तो मैं मलेरिया इन्सपेक्टर की नौकरी ही करता। जिन्दगी में इस तरह का मोढ़ और उससे मिले अवसरों के कारण व्यक्तित्व का जो भी विकास हुआ वह विजय चौहान की देन है। काश, विजय चौहान सरीखे अनेकों शिक्षक देश में होते।

बरसात से पूर्व आशियाना बनाने की कवायद फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला

बाबा नागार्जुनः सत्य वह है जो हम अनुभव करते हैं

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

क ई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास
कई दिनों तक, कानी कुतिया
सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर
छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी
हालत रही शिकस्त
दानें आये घर के अंदर
कई दिनों के बाद
धुँआ उठा आंगन से ऊपर
कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आंखें
कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पांखें
कई दिनों के बाद

यह कविता अकाल और भुखमरी की मार्मिक स्थिति का चित्रण करती है। कई दिनों तक घर में अनाज न होने के कारण, चूल्हा नहीं जलता, चक्की नहीं चलती पूरा वातावरण सुस्त है। चूल्हे, चक्की, चूहे, छिपकली, कौए, कुतिया के माध्यम से गरीबी और भूख की पीड़ा को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। कई दिनों के बाद जब घर में अनाज आता है तो आंखें जगमगा उठती हैं। इतना मार्मिक चित्रण कोई इंसान अपने अनुभवों से ही गढ़ सकता है और ये नज़्म रचने वाले हैं हमारे ''बाबा नागार्जुन''।

भारत के प्रसिद्ध जनकवि और प्रगतिशील कवि बाबा नागार्जुन हिंदी और मैथिली साहित्य के अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाकार थे। उनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था और वे ''यात्री'' और नागार्जुन नामों से लिखते थे। उन्हें जनता की समस्याओं, किसानों, मजदूरों को अपनी कविताओं में स्वर देने के कारण ''जनकवि'' कहा जाता है उनका जन्म 30 जून, 1911 को बिहार में हुआ था।

''नागार्जुन'' की गिनती न तो प्रगतिशील कवियों के संदर्भ में होती है और न नई कविता के प्रसंग में जितने प्रयोग अकेले नागार्जुन ने किए हैं उतने ही शायद किसी ने किये हों। भला नेवले पर कविता कौन लिखता है पर जेल में नेवला देख उस पर ही कविता कर दी। भूख से पीड़ित हो लिखते हैं

''प्रभु तुम कर दो वमन,
होगा मेरी सुधा का शमन''

जैसी लाइनों को लिखने का साहस नागार्जुन ही कर सकते हैं।

देश की व्यवस्था, राजनीति में भरपूर दख़ल देने वाले नागार्जुन कहते हैं .....

दो हजार मन गेहूँ आया, दस गांवों के नाम
राधे चक्कर लगा काटने, सुबह हो गई शाम
सौदा पटा बड़ी मुश्किल से, पिछले नेताराम
पूजा पाकर साध गये चुप्पी हाकिम-हुकाम

हिंदी के आधुनिक कबीर नागार्जुन की कविता के बारे में डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा हैः जहाँ मौत नहीं, बुढ़ापा नहीं है, जनता के असंतोष और राज्यसभाई जीवन का संतुलन नहीं है।

वहीं अब्दुल बिस्मिल्लाह लिखते हैं कि बाबा ने दो भाषाओं में कविता लिखी सच तो यह है चार में लिखी हिंदी, मैथिली, बांग्ला, संस्कृत। मिथला के तो वे थे वे बांग्ला भी जानते थे क्योंकि वे घुमक्कड़ थे सबसे ज्यादा प्रसिद्धि हिंदी में मिली। हालांकि उन्हें मैथिली के संग्रह पर साहित्य अकादमी सम्मान मिला।

''भोजपुर''
यही धुँआ मैं ढूंढ रहा था
यही आग मैं खोज रहा था
यही गंध थी मुझे चाहिये
बारूदी छर्रे की खुशबू
ठहरो-ठहरो इन नथुनों में इसको भर लूँ
बारूदी छर्रे की खुशबू
भोजपुर माटी सोंधी है
इसका अदभुत सोंधापन
लहरा उठ्ठी
कदम कदम पर, इस माटी पर
महामुक्ति की अग्निगंध
ठहरो-ठहरो इन नथुनों में
इसको भर लूँ
अपना जनम स-कारथ कर लूँ
अशोक वाजपेई जी कहते हैं वह सीधे-सीधे

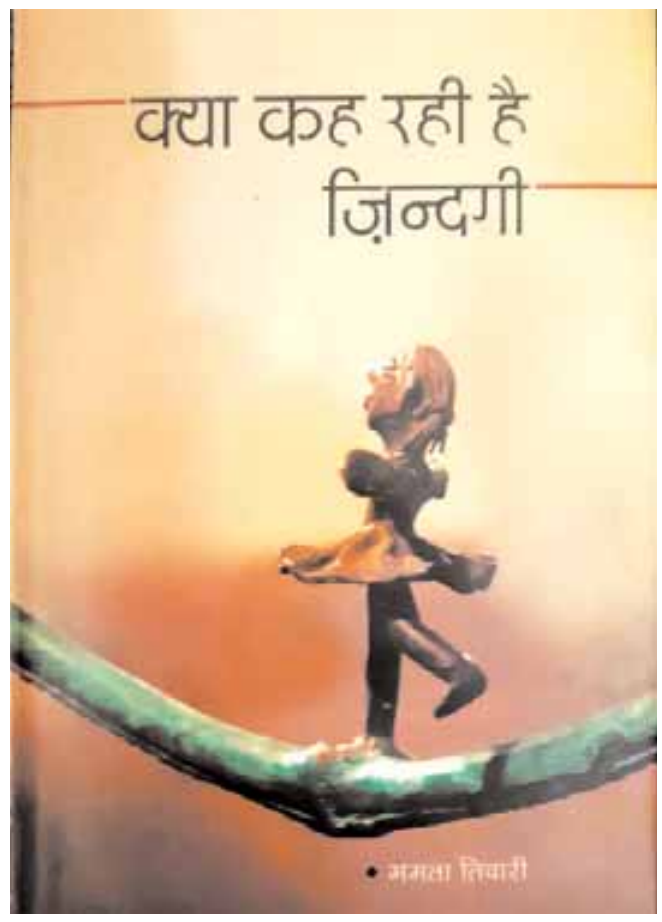

राजनीति पर लिखते थे ''इन्दु जी, इन्दु जी क्या हुआ आपको....., भूल गयी बाप को।''

वह कविता है नागार्जुन की।

प्रतिबद्ध हूँ
संबद्ध हूँ
आबद्ध हूँ
सचर-अचर सृष्टि से

सामयिक प्रकाशन की ''नागार्जुन दिल्ली में'' ''जाहिदुल दीवान'' द्वारा लिखी गई पुस्तक है जिसमें अशोक वाजेपयी, अनवर जमाल, असगर वजाहत इब्बार रब्बी, रामकुमार कृषक, निर्मला गर्ग, पकंज और बिष्ट, और भी तमाम समकालीन और युवा लेखकों ने (कुछ ने तो उन्हें देखा भी नहीं) बाबा को याद किया है बाबा उवाच.....

मुन्ना मुझको
पटना-दिल्ली मत जाने दो
भूमिपुत्र के संग्रामी तेवर लिखने दो
पुलिस दमन का स्वाद मुझे भी चखने दो
मुन्ना, मुझे पास आने दो
पटना दिल्ली मत जाने दो

''जाहिदुल'' साहब ने नागार्जुन के बार बार दिल्ली गमन पर साहित्यकारों से संस्मरण लिये। ''अनवर जमाल'' साहब ने बाबा पर डाक्यूमेंट्री बनाई। सत्य वह होता है जो हम अनुभव करते है। बाबा उसी सत्य को देखते हैं तभी ना ''कटहल'' पर कहते है ''आह कटहल, वाह कटहल, वह महक रहा कटहल रामकुमार कृषक जी ने उनके दो इंटरव्यू लिये उनका कहना है कई बार बाबा हमें झिडक भी देते थे। मान लीजिये हम साहित्य की बात कर रहे हैं तो वे कहते क्या साहित्य-वाहित्य लगा रखा है कुछ और बताओ, कोई और बात करो और फिर गांव तक का हाल चाल पूछते दिल्ली और राजनीति पे उन्होंने कई कवितायें की जैसे

आये दिन बहार के
खिले हैं दांत
ज्यूं दाने जो अनार के
आये हैं दिल्ली से अभी
टिकट मार के

बाबा को राजनीति से गहरी दिलचस्पी थी। संपूर्ण क्रांति आंदोलन में वे गिरफ्तार हो गये थे पटना में गोली चली थी। पूरा पटना हिल गया कोई साहित्यकार नहीं थे केवल नागार्जुन थे। उन्होंने उस घटना पे ''तड़पन'' लिखी। सांकेतिक रूप से प्रेम भी रचा-

कर गई चाक
तिमिर का सीना
जोत की फांक
यह तुम थी

एक रचना है ''गुलाबी चूड़ियाँ
प्राइवेट बस का ड्राइवर है
तो क्या हुआ
सात साल की बच्ची का पिता तो है
सामने गियर से ऊपर
हुक से लटका रक्खी है
कांच की चार चूड़ियाँ गुलाबी
सच्चा धर्म निभायें
बस की रफ़्तार के मुताबिक
हिलती रहती है
आहिस्ते से बोला
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया
टांगे हुये है, कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अण्णा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती है चूड़ियाँ
किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से

वर्ना ये किसको नहीं भाएँगी
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ

श्रीकांत मिश्र जो उनके पुत्र है लिखते हैं कि मेरे पिता कवि, लेखक हैं ये पता था उनके महत्व का पता दिल्ली आकर चला तब मुझे अहसास हुआ वे क्या है। उन्होंने कभी नौकरी नहीं की, आर्थिक कष्ट सवाभाविक था वे अपनी क्षमतानुसार यह जिम्मेदारी पूरी करते। पिता जी को थोड़ी देर से जाना कि हमसे दूर रहते थे। घर में कोई आर्थिक स्रोत नहीं था। ननिहाल संपन्न था। फिर बहन की शादी के बाद सब दिल्ली आ गये जहाँ साहित्यकारों का आना जाना लगा रहता था पैसों की तंगी के कारण जमीन छुड़ाना मुश्किल था पिताजी गुमसुम रहने लगे।

वाणी प्रकाशन से 2-3 किताबों के पैसे मिले और पिताजी दायित्व से मुक्त हो गये। मेरे पिता आर्थिक तंगी के बावजूद कहीं असहज महसूस नहीं करते थे इसका सबसे बड़ा कारण शायद उनका गरीब परिवार से होना था वे स्वयं भी स्वतंत्र थे परिवार पर भी कुछ नहीं थोपते थे। जिन विषयों पे लोग बात करने से हिचकते थे वे धड़ल्ले से बोलते थे उनके पास कोई डिग्री नहीं थी। संस्कृत में आचार्य तक की पढ़ाई की थी वे अपने अनुभव को शिक्षा मानते थे। अंतिम समय में वे बड़े बेटे के पास दरभंगा चले गये थे। माँ के जाने के बाद वे खोये खोये से रहने लगे थे। उनके इतने किस्से हैं जो एक बार में नहीं कहे जा सकते। चलते-चलते उनकी एक और नज़्म

सुबह सुबह
तालाब के दो फेरे लगाए
सुबह सुबह
राति शेष की भीगी दूबों पर
नंगे पांव चहलकदमी की
सुबह सुबह
हाथ पैर ठिठुरे, सुन्न हुये
माघ की कडी सर्दी के मारे
सुबह सुबह
अध सूखी पतइयों का कौड़ा तापा
आम के उच्चे पत्तों का
जलता कड़वा कसैला सौरभ लिया
सुबह सुबह
आंचलिक बोलियों का मिक्सचर
कानों की इन कटोरियों में भरकर लौटा
सुबह सुबह।

चंदा, चोरी, चुगद और चकोरी

कटाक्ष

दुष्यन्त कुमार व्यास

सेवानिवृत्त प्राध्यापक गणित

यो अनादि काल से इस नश्वर संसार में तीन धंधे सर्वमान्य है , शाश्वत हैं जो कभी खत्म नहीं हो सकते ,खत्म होंगे भी नहीं। भले ही खत्म करने का वादा करने वालों की पीढ़ियाँ खत्म हो जाय।

उनमें से एक है चंदा!

अहा! कितना प्यारा शब्द है ,जब कोई बोलता है तो बोलने वाले और सुनने वाले की आत्मा बाग-बाग हो जाती है। दोनों की सोच अलग-अलग एक को लेने का सुख दूसरे को देने का शाही भाव। इन सब से बहुत ऊँचा है निष्प्रह चंदा एकत्र करवाने वाला।

चंदे का मर्मज्ञ समझता है कि चंदा कैसे लेना है वह जानता है गीता के रहस्य को ,उसने पढ़ा है तुलसी,सूर रहीम और कबीर को ,वह किसी को जाने न जाने वह हरिश्चंद्र,रंतिदेव,शिवि और कर्ण को जानता है। माँगने का भाव उसे किस समय पर कैसे और किस प्रकार आर्त रुप में दिखाना है आता है।

चंदा मांगने वाला बालक ही आगे जाकर एक कुशल बीमा एजेंट,निवेश सलाहकार और चार्टर्ड एकाउंटेंट बन सकता है। वह उन सारी विधियों का ज्ञाता होता है जो विश्व के विदुरों, चाणक्यों, भिखारियों मेकावलियों ने लिखी है।

चंदा लेने के लिए सबसे पहले जरूरत होती है रसीद बुक की और कुछ रसीदें गणमान्य लोगों के नाम पर कटी रसीदों के अधपन्ने की ।उसे मालूम है बिना चारा डाले बकरी नहीं आती ,उसे मालूम है पड़ौसी की साड़ी मेरी साड़ी से सफेद क्यों वाला स्लोगन।

उसने खूब सुना है ओनिडा टीवी का नेबर्स एन वे।

पड़ौस वाले शर्माजी ने क्या दिया अगर कोई पूछे तो तय कि (मुर्गा) भाईसाहब चंदा देंगे जरूर,बस चंदा भाभी की तारीफ थोड़ी हो जाय।

चंदा मांगने की कला सीखने में वह गीता के मान-अपमान में समान रहने के उपदेश का पालन करता है। दस बार मना करने के बाद ग्यारहवीं बारहवीं चंदा प्राप्त करने में सफल होना उसके सफल बीमा एजेंट बनने की गारंटी है ऐसा करके वह सरकार के स्वावलंबी होने की सलाह का पालन करना है।

जब चंदे की बात हो तो उसे अपने चमड़े के बने पेट की याद न आए संभव नहीं आखिर

चमड़ी झोपड़ी में आग तो लगती है

भूखे पेट से ध्यान भी नहीं होता और खाली जेब से लड़की भी नहीं पटती तो चंदा इकट्ठा करने में शरीर का ध्यान रखना पड़ता है, इस समय उसे याद आता है अन्न ही ब्रह्म है तो अन्न आएगा तो चंदे के अंदर से ही।

आखिर काम चंदे का तो चून की जिम्मेदारी तो चंदे पर ही होगी।जब कहीं भंडारा होता है तो व्यवस्था के लिये कार्यकर्ता चाहिए सामग्री चाहिए इन सबके लिए पैसा तो चंदे से ही आना है।

अब नासमझ लोग समझते नहीं कि भोजन

करवाने में कुछ जूठन इधर-उधर गिरती है वहीं जूठन ये कर्मचारी समेट ले तो क्या ग़लत है? पतीले में खुरचन तो बचती है न!

अब क्या खुरचन भी साफ नहीं करें?

अहा क्या दृष्य है! कितने ही सूटेड-बूटेड लोग चंदा इकट्ठा करने वाले सेवादारों की लाइन में लगें हैं फार्म भर रहें हैं ,बिना वेतन के सेवा देना चाहते हैं,चाहते हैं बस इस शाश्वत धंधे में लगना ! मेरी तो आँखे भर आई है कंठ अवरुद्ध हो गया है !

हे चंदा देव!

वो जो दूर खड़े छाती पीट रहें हैं चिल्ला रहें हैं उनकी समझ की बत्ती अब जली है।

रोते-रोते कह रहें हैं

हाय हम न हुए

तभी मां लेते ,घुस जाते इस ढोल की पोल में तो अब तक वारे-न्यारे हो जाते जिंदगी बन जाती,सात पीढियों की चिंता दूर हो जाती। अब ये चुगद

हाथ जोड़ रहें हैं कह रहे हैं दे दो माफी एक बार दें दो मौका! पर अब इन चुगदों को कौन समझाए कि गया वक्त कब आता है।

क्या हो? पीठ रहे हैं छाती

हाय चंदा- हाय चंदा

लो बात चंदे की चली तो याद आया मेरी चंदा भी आस लगाए बैठी है नई स्कूटी की, कल ही चेतावनी दी थी इस पुराने टूटे-फूटे चेतक को बदलने की।

तो अब उस चकोरी की बात तो मानना ही होगी न !

इसमें चोरी की बात करना नादानी है,नासमझी है,बचपना है।

जग जाहिर है

चंदा का चकोरी से प्रेम

और हम हिंदुस्तानी तो प्रेम में जान भी दे देते हैं। यह चंदा तो तुच्छ है ,दूसरे के हाथों का मैल है वे तो दान दे चुके,उनको पुण्य मिल गया वह उनके पारलौकिक बैंक में जमा हो गया वह तो अपरिवर्तनीय मुद्रा है। अब उनको क्या कि जो दिया वह कहाँ गया उससे उनको क्या?

उनके खाते से देन-लेन पूरा हुआ। बैंक की दीवार पर साफ-साफ लिखा होता है कि काउंटर छोड़ने से पहले अपने लेन-देन की पूरी जानकारी कर ले,रसीद ले ले।

अब दिये गये नोट असली हैं या नकली इसकी जाँच में समय लगता है फिर रसीद दी जाती है अब तुम बिना रसीद लिए खिसक गये तो किसकी जिम्मेदारी? भुगतो!

अरे भाई तुम्हारे चंदे से भगवान खुश होंगे तुम्हें आशीर्वाद देंगे यही चाहते थे न तुम! तो मेरे भीतर भी भगवान है और मेरी चकोरी में भी वही है, बस हो गया फैसला।चंदा तेरा तेने दिया मैंने लिया मुझे भगवान को देना है मैं दे दूँगा ।

तू कहाँ इन व्यर्थ की बातों में उलझा है।

बस यह याद रख

जो तेरा है ,वो मेरा है

मेरा तो बस मेरा ही है।

मत कर ज्यादा विचार, आ तू बस बार-बार।

तो बोल- चंदा हो चंदा !